38 सूरए (साद)

आयत 1-5 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण

आयत 1

आयत का अनुवाद:
"सआद नसीहत करने वाले कुरान की क़सम (तुम बरहक़ नबी हो)।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कुरआन की क़सम लेकर नबी को सत्य ठहराती है।

- **हेतु (Reason):**
  कुरआन को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इस साक्ष्य का स्वयं प्रमाणित या स्पष्ट आधार नहीं दिया गया है। किसी धार्मिक पुस्तक का विश्वास और सत्यता केवल आस्थाओं पर आधारित होती है, जब तक कि उस पर तर्क और प्रमाण की कड़ी पेश न की जाए।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में प्रमाण (Pramana) **की श्रेणियाँ हैं, जिनमें तर्क** (Anumana) **और दृश्य** (Pratyaksha) **शामिल हैं। इसी प्रकार, धार्मिक ग्रंथों के सिद्धांत को साबित करने के लिए प्रामाणिक तर्क और प्रमाण आवश्यक होते हैं।**

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में किसी भी सत्य का प्रमाण तथ्य और तर्क से होना चाहिए, जो इस आयत में नहीं दिखाई देता।

- **निगमन (Conclusion):**
  आयत में कुरआन की क़सम ली गई है, लेकिन इस क़सम को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कोई तर्क या स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"मगर ये कुफ़्फ़ार (ख़्वाहमख़्वाह) तकब्बुर और अदावत में (पड़े अंधे हो रहें हैं)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत कहती है कि कुफ़्फ़ार लोग तकब्बुर और अदावत के कारण अंधे हो रहे हैं।

- **हेतु (Reason):**
  इस आयत में कारण दिया गया है कि कुफ़्फ़ार लोग अपने अहंकार (तकब्बुर) और शत्रुता (अदावत) के कारण अंधे हो रहे हैं। यह एक धार्मिक या आध्यात्मिक कारण है, जो तर्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, उदाहरण स्वरूप भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा कि अहंकार से ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती, लेकिन यह भी समझाया गया है कि यह केवल आस्थाओं या दृष्टिकोण का विषय है, इसे तार्किक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, यह दावा किया गया है कि शत्रुता और अहंकार के कारण लोग अंधे हो जाते हैं, लेकिन इसका वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत का तर्क केवल मानसिक या आध्यात्मिक आधार पर आधारित है, जो कि तर्क और प्रमाण से रहित है।

आयत 3

आयत का अनुवाद:
"हमने उन से पहले कितने गिरोह हलाक कर डाले तो (अज़ाब के वक़्त) ये लोग चीख़ उठे मगर छुटकारे का वक़्त ही न रहा था।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यास्पति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि अज़ाब के समय इन लोगों का चीखना व्यर्थ था, क्योंकि तब तक छुटकारे का कोई समय नहीं था।

- **हेतु (Reason):**
  यह एक घटनात्मक दावे के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि अज़ाब के बाद कोई भी बचाव नहीं हो सकता। हालांकि, यह केवल एक तात्कालिक दृष्टिकोण है, और इसके तर्क का कोई सार्वभौमिक समर्थन नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, कर्मफल का सिद्धांत है जिसमें कहा गया है कि कर्मों के अनुसार फल मिलता है, लेकिन इससे भी जुड़े सबक को तार्किक रूप से साकार रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी घटनात्मक दावा तर्क और प्रमाण से सिद्ध किया जाना चाहिए, जो इस आयत में नहीं किया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक घटनात्मक दावा करती है, लेकिन इसका तर्क केवल एक तात्कालिक घटना पर आधारित है, जो अन्य परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता।

आयत 4

आयत का अनुवादः

"और उन लोगों ने इस बात से ताज्जुब किया कि उन्हीं में का (अज़ाबे ख़ुदा से) एक डरानेवाला (पैग़म्बर) उनके पास आया और काफिर लोग कहने लगे कि ये तो बड़ा (खिलाड़ी) जादूगर और पक्का झूठा है।"

चुना गया न्याय तत्वः

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत कहती है कि लोग पैग़म्बर के आने पर हैरान हुए और उन्हें झूठा और जादूगर कहा।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ पर उनके द्वारा दी गई तर्कहीन आलोचना को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह भी दर्शाया गया कि यह आलोचना केवल उनकी अस्वीकृति और आस्थाओं की बाध्यता से उपजी थी। यह तर्क निष्कलंक नहीं है क्योंकि किसी भी विचार या दावे का विरोध करना केवल असहमति का परिचायक होता है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, असहमति और विरोध को लेकर भी विभिन्न दृष्टिकोणों के होने का उल्लेख किया गया है, जैसे कि सांख्य योग के सिद्धांत में भिन्न दृष्टिकोणों का महत्व है, लेकिन उनका सत्यापन तर्क और अनुभव से होता है।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में किसी भी दावे का विरोध तभी किया जा सकता है जब उसका पर्याप्त प्रमाण या तर्क हो। इस आयत में विरोध केवल असहमति पर आधारित है, और इस पर कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में पैग़म्बर के विरोध को केवल अस्वीकृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो बिना प्रमाण के है।

आयत 5

आयत का अनुवाद:
"भला (देखो तो) उसने तमाम माबूदों को (मटियामेट करके बस) एक ही माबूद क़ायम रखा ये तो यक़ीनी बड़ी ताज्जुब ख़ेज़ बात है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि एक ही माबूद की उपासना को लेकर लोगों को ताज्जुब होता है।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ पर उपमान का प्रयोग किया गया है, जहाँ एक माबूद की उपासना को विशेष रूप से ताज्जुब की बात बताया गया है। लेकिन यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, जो तर्किक रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में एकत्व का सिद्धांत है, जैसे कि अद्वैत वेदांत में ब्रह्म को सबका मूल माना गया है। लेकिन यह भी एक दर्शनिक दृष्टिकोण है, और इसका वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हो सकता।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में, किसी उपमा का प्रयोग तभी उचित होता है जब वह प्रामाणिक रूप से सिद्ध हो। यहाँ पर इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका तर्क प्रमाणित नहीं किया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	कुरआन की क़सम ली गई, लेकिन इसका प्रमाण या तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया।

2	**हेतु**	**शत्रुता और अहंकार के कारण अंधे होने का दावा, जो तर्क से साबित नहीं किया जा सकता।**
3	**व्याप्ति**	**अज़ाब के समय चीखने का दावा, जो तात्कालिक घटना है और सार्वभौमिक नहीं हो सकता।**
4	**प्रमाण**	**पैग़ाम्बर के विरोध को बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।**
5	**उपमान**	**एक माबूद की उपासना को ताज्जुब की बात कहा गया, जो एक धार्मिक दृष्टिकोण है और प्रमाणित नहीं किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दावे और घटनात्मक तर्क प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन इनमें से अधिकतर तर्क या तो बिना प्रमाण के हैं या केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी विचार को प्रमाण और तर्क से समर्थन किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है। इसलिए, इन आयतों का तार्किक आधार कमजोर है।

आयत 6-10 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"और उनमें से चन्द रवादार लोग (मजलिस व अज़ा से) ये (कह कर) चल खड़े हुए कि (यहाँ से) चल दो और अपने माबूदों की इबादत पर जमे रहो यक़ीनन इसमें (उसकी) कुछ ज़ाती ग़रज़ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि कुछ लोग यह मानते हैं कि नबी का संदेश केवल ज़ाती ग़रज़ के लिए है और यह सच नहीं हो सकता।

- **हेतु (Reason):**
 यहाँ पर यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि नबी का संदेश व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित हो सकता है, जो बिना किसी साक्ष्य के कहा गया है। यह एक अप्रमाणित आरोप है।

- **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में हम देखते हैं कि किसी भी व्यक्ति या गुरू के संदेश के सत्यता का मूल्यांकन तर्क और प्रमाण से किया जाता है, न कि केवल उनके व्यक्तिगत उद्देश्य के आधार पर।

- **उपनया (Application):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी आरोप या तर्क को प्रमाण के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस आयत में यह केवल बिना प्रमाण के आरोप है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत एक अप्रमाणित आरोप प्रस्तुत करती है, जो किसी प्रमाण से समर्थित नहीं है।

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"हम लोगों ने तो ये बात पिछले दीन में कभी सुनी भी नहीं हो न हो ये उसकी मन गढ़ंत है।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 आयत कहती है कि यह नया संदेश (कुरआन) एक मनगढ़ंत बात है, जिसे पहले कभी नहीं सुना गया।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि कोई नया विचार या संदेश इसलिए गलत है क्योंकि वह पहले नहीं सुना गया था। यह तर्क बेतुका है, क्योंकि सत्यता केवल उसके पहले सुनने या पुराने होने से निर्धारित नहीं होती।

- **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में, नये विचारों को मान्यता तभी दी जाती है जब वे तर्क और प्रमाण से समर्थन पाते हैं। उदाहरण के तौर पर, योग दर्शन के सिद्धांत या वेदांत के विचार सदियों से प्रस्तुत हुए हैं, जो नए नहीं थे, लेकिन उनका सत्यापन तर्क से हुआ।

- **उपनया (Application):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, कोई विचार या संदेश इसलिए गलत नहीं हो सकता क्योंकि वह नया है या पहले नहीं सुना गया। इस आयत का तर्क केवल अनुभवहीनता पर आधारित है, जो किसी विचार की सत्यता का निर्धारण नहीं कर सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
 इस आयत में यह दावा किया गया है कि कोई बात केवल इसलिए गलत है क्योंकि वह पहले नहीं सुनी गई, लेकिन यह तर्क नकारात्मक और अपर्याप्त है।

आयत 8

आयत का अनुवाद:
 "क्या हम सब लोगों में बस (मोहम्मद ही क़ाबिल था कि) उस पर कुरान नाज़िल हुआ, नहीं बात ये है कि इनके (सिरे से) मेरे कलाम ही में शक है कि मेरा है या नहीं बल्कि असल ये है कि इन लोगों ने अभी तक अज़ाब के मज़े नहीं चखे।"

चुना गया न्याय तत्व:
 हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 आयत कहती है कि लोग यह मानते हैं कि मोहम्मद (पैग़म्बर) को ही कुरआन क्यों नसीब हुआ, और इस पर शक करते हैं कि यह संदेश सही है या नहीं।

- **हेतु (Reason):**
 यहाँ पर यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यदि लोग अज़ाब का सामना करते, तो वे विश्वास करते। यह तर्क नकारात्मक है, क्योंकि विश्वास केवल अनुभव या भय से नहीं होना चाहिए।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में कर्म का सिद्धांत है, जो यह बताता है कि किसी के कर्म और फल के आधार पर उसे परिणाम मिलता है, न कि केवल भय से कोई कार्य सही माना जाता है।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, विश्वास तर्क और प्रमाण से होना चाहिए, न कि किसी के भय या अनुभव से। इसलिए, इस आयत का तर्क कमजोर और अनुचित है।

- **निगमन (Conclusion):**
  आयत में यह कहा गया है कि विश्वास केवल अनुभव पर आधारित होना चाहिए, जो एक नकारात्मक तर्क है।

आयत 9

आयत का अनुवाद:
"(इस वजह से ये शरारत है) (ऐ रसूल) तुम्हारे ज़बरदस्त फ़य्याज़ परवरदिगार के रहमत के ख़ज़ाने इनके पास हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि इन लोगों के पास खुदा की रहमत के खजाने हैं, इसलिए इन्हें अपनी इच्छाओं के अनुसार कार्य करने का अधिकार है।

- **हेतु (Reason):**
  इस आयत में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि खुदा की रहमत के खजाने इन लोगों के पास हैं, लेकिन यह तर्क सार्वभौमिक नहीं हो सकता क्योंकि यह एक विशेष समूह के लिए है और इसका कोई सामान्य आधार नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, विशेष अधिकार केवल योग्यता और नैतिकता से निर्धारित होते हैं, न कि केवल

बाहरी परिस्थितियों से। इसलिए, यह तर्क केवल विशिष्ट स्थिति में ही लागू हो सकता है।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में यह माना जाता है कि अधिकारों और कर्तव्यों को तर्क और प्रमाण से निर्धारित किया जाता है, न कि किसी विशेष स्थिति या खजाने के आधार पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क विशिष्ट है और सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता, जिससे यह कमजोर पड़ता है।

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"या सारे आसमान व ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की सलतनत इन्हीं की ख़ास है तब इनको चाहिए कि रास्ते या सीढ़ियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ और इन्तेज़ाम करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में कहा गया है कि आसमान, ज़मीन और दोनों के बीच की सलतनत केवल खुदा की है, और इनको चाहिए कि वे अपनी राह बनाएं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि अगर ये लोग खुदा की सलतनत को पहचानते हैं, तो उन्हें अपनी शक्ति से आसमान पर चढ़ना चाहिए। यह एक अलंकरण है, जो तर्क से सिद्ध नहीं हो सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में भी ब्रह्मा, विष्णु और शिव के संबंध में यह माना गया है कि सर्वोच्च सत्ता केवल एक है, लेकिन यह दर्शन केवल आस्था पर आधारित है और इसका तर्क या प्रमाण देना संभव नहीं है।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में यह आवश्यक है कि किसी भी विचार को तर्क और प्रमाण से सिद्ध किया जाए, न कि केवल आस्थाओं और कल्पनाओं पर आधारित होकर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह विचार केवल कल्पना पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण या तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	हेतु	बिना प्रमाण के आरोप लगाया गया कि नबी का संदेश स्वार्थ से प्रेरित है।
7	प्रमाण	नया संदेश केवल इसलिए गलत नहीं हो सकता क्योंकि वह पहले नहीं सुना गया।
8	हेतु	विश्वास का निर्धारण भय और अनुभव पर नहीं, बल्कि तर्क और प्रमाण से होना चाहिए।
9	व्याप्ति	केवल विशेष समूह के लिए स्थित तर्क को सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।
10	प्रमाण	आस्थाओं और कल्पनाओं पर आधारित विचारों का प्रमाण या तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए तर्क और विचार अक्सर अपर्याप्त हैं और तर्क या प्रमाण से रहित हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी विचार या दावे का मूल्यांकन तर्क, प्रमाण और अनुभव के आधार पर किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयत 11-15 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण

आयत 11

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल उन पैग़म्बरों के साथ झगड़ने वाले) गिरोहों में से यहाँ तुम्हारे मुक़ाबले में भी एक लशकर है जो शिकस्त खाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में कहा गया है कि नबी के खिलाफ़ खड़े होने वाला गिरोह अंततः हार जाएगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि जैसे पहले गिरोह हार गए थे, वैसे ही यह भी हार जाएंगे। यह सामान्यीकरण का दोष है, क्योंकि यह सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता। हर संघर्ष के अपने विशिष्ट कारण और परिणाम होते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से न्याय दर्शन में, यह माना जाता है कि हर घटना और परिणाम तात्त्विक कारणों पर आधारित होता है। इसलिए यह सामान्यीकरण तर्क में कोई विश्वसनीयता नहीं रखता।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटनाक्रम का परिणाम विशिष्ट कारणों के आधार पर होना चाहिए, न कि केवल पहले के घटनाक्रमों से अनुमानित किया जाए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क सामान्यीकरण का दोषी है और इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 12

आयत का अनुवाद:
"उनसे पहले नूह की क़ौम और आद और फिरऔन मेंख़ों वाला।"

चुना गया न्याय तत्वः
उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह कहा गया है कि पहले भी विभिन्न क़ौमों ने पैग़म्बरों को झुठलाया और उन्हें अज़ाब का सामना करना पड़ा।

- **हेतु (Reason):**
  इस आयत में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि पुरानी क़ौमें झूठ बोलने पर सजा पाई, इसलिए इस समय के काफ़िरों को भी सजा मिलेगी। यह तर्क ऐतिहासिक उदाहरणों से पुष्टि करना चाहता है, लेकिन हर परिस्थिति में यह सही नहीं हो सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, हर क़ौम या घटना का परिणाम अलग-अलग हो सकता है। उदाहरण के रूप में, हर व्यक्ति का कर्म और फल उसकी स्थिति, निर्णय और परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में यह महत्वपूर्ण है कि हर घटना और उसका परिणाम विशिष्ट कारणों पर आधारित हो, न कि केवल पूर्ववर्ती उदाहरणों पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क भूतपूर्व घटनाओं के आधार पर भविष्यवाणी करता है, जो हर बार सही नहीं हो सकती है।

आयत 13

आयत का अनुवादः
"और समूद और लूत की क़ौम और जंगल के रहने वाले (क़ौम शुऐब ये सब पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं यही वह गिरोह है।"

चुना गया न्याय तत्वः
उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह कहा गया है कि समूद, लूत और शुऐब की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झूठा ठहराया और उन्हें अज़ाब का सामना करना पड़ा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि जो लोग पैग़म्बरों की बातों को झूठा ठहराते हैं, उन्हें सजा मिलती है। यह एक ऐतिहासिक उदाहरण है, लेकिन इसका आधार केवल अतीत के उदाहरणों पर नहीं रखा जा सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि हर घटना के परिणाम विशिष्ट कारणों और परिस्थितियों पर आधारित होते हैं, न कि केवल पहले हुई घटनाओं पर।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, ऐतिहासिक घटनाओं से हम सामान्य सिद्धांत नहीं बना सकते, क्योंकि हर घटना के अपने विशिष्ट कारण होते हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क केवल उदाहरणों पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

आयत 14

आयत का अनुवाद:
"(जो शिकस्त खा चुके) सब ही ने तो पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमारा अज़ाब ठीक आ नाज़िल हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में कहा गया है कि जो लोग पैग़म्बरों को झुठलाते हैं, उन्हें अज़ाब का सामना करना पड़ता है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि पैग़म्बर को झुठलाना अज़ाब का कारण है। यह एक कारण-

परिणाम संबंध प्रस्तुत करता है, लेकिन यह बिना किसी अन्य प्रमाण के केवल सामान्यीकरण पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में कारण-परिणाम का सिद्धांत बहुत स्पष्ट है, और यह विश्वास किया जाता है कि हर कारण का अपना विशिष्ट परिणाम होता है, जो तर्क और प्रमाण से सिद्ध होता है, न कि केवल सामान्यीकरण से।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में कारण और परिणाम के बीच संबंध को प्रमाण और तर्क के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। इसलिए, इस आयत में बिना प्रमाण के यह सामान्य कारण-परिणाम संबंध प्रस्तुत किया गया है, जो सही नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत सामान्यीकरण पर आधारित है और प्रमाण या तर्क से समर्थित नहीं है।

आयत 15

आयत का अनुवाद:
"और ये (काफिर) लोग बस एक चिंघाड़ (सूर के मुन्तज़िर हैं जो फिर उन्हें) चश्में ज़दन की मोहलत न देगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह कहा गया है कि काफ़िरों को जल्द ही अज़ाब का सामना करना पड़ेगा, और यह अज़ाब एक चिंघाड़ के रूप में आएगा।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ पर यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि काफ़िरों का अज़ाब तय है और यह तुरंत आएगा। यह तर्क बिना किसी अन्य साक्ष्य के केवल भविष्यवाणी पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, किसी भी भविष्यवाणी का सत्यापन प्रमाण और तर्क से किया जाता है। भविष्यवाणी केवल अतीत या वर्तमान घटनाओं से तय नहीं की जा सकती।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में, कोई भी घटना तभी भविष्यवाणी की जा सकती है जब उसके प्रमाण हों और यह घटना विशिष्ट कारणों से उत्पन्न हो।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क भविष्यवाणी पर आधारित है, जो बिना किसी प्रमाण और तर्क के सही नहीं हो सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	व्याप्ति	सामान्यीकरण का दोष, हर स्थिति में लागू नहीं हो सकता।
12	उदाहरण	ऐतिहासिक उदाहरणों पर आधारित तर्क जो भविष्य में सही नहीं हो सकता।
13	उदाहरण	ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण बिना प्रमाण के किया गया।
14	हेतु	बिना प्रमाण के कारण-परिणाम का सामान्यीकरण।
15	हेतु	भविष्यवाणी जो केवल आस्थाओं पर आधारित है और प्रमाण से समर्थित नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए तर्कों में सामान्यीकरण और भविष्यवाणी का दोष है, जो बिना प्रमाण और तर्क के किए गए हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे का मूल्यांकन प्रमाण, तर्क और विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयत 15-20 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण

आयत 15

आयत का अनुवादः
"और ये (काफ़िर) लोग बस एक चिंघाड़ (सूर के मुन्तज़िर हैं जो फिर उन्हें) चश्में ज़दन की मोहलत न देगी।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  आयत में कहा गया है कि काफ़िरों को जल्द ही अज़ाब का सामना करना पड़ेगा, और यह अज़ाब एक चिंघाड़ के रूप में आएगा।

- हेतु (Reason):
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि काफ़िरों का अज़ाब तय है और यह तुरंत आएगा। यह तर्क भविष्यवाणी पर आधारित है, जो बिना किसी प्रमाण के किया गया है। भविष्यवाणी को प्रमाण और तर्क से सिद्ध किया जाना चाहिए, जो यहाँ नहीं किया गया है।

- उदाहरण (Example):
  भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना के भविष्यवाणी को प्रमाण और तर्क से पुष्टि करनी चाहिए। भविष्यवाणी केवल बिना साक्ष्य के नहीं की जा सकती।

- उपनया (Application):
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का भविष्यवाणी तब सही मानी जाती है जब उसके आधार पर कारण और तर्क स्पष्ट हों। यहाँ पर कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

- निगमन (Conclusion):
  यह तर्क भविष्यवाणी पर आधारित है, जो बिना प्रमाण के सही नहीं हो सकती।

आयत 16

आयत का अनुवादः
"और ये लोग (मज़ाक से) कहते हैं कि परवरदिगार हिसाब के दिन (क़यामत के) क़ब्ल ही (जो) हमारी क़िस्मत को लिखा (हो) हमें जल्दी दे दे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में कहा गया है कि काफ़िरों का यह कहना है कि क़यामत का दिन जल्द आना चाहिए ताकि उन्हें अपनी किस्मत का पता चल सके।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ काफ़िरों का यह तर्क है कि वे क़यामत के दिन की जल्दी आने की बात करते हैं ताकि उनकी किस्मत का खुलासा हो सके। यह तर्क न सिर्फ़ समय की अव्यवस्था का संकेत देता है, बल्कि यह तर्क भी गलत है, क्योंकि किस्मत के बारे में पूर्वनिर्धारित तात्त्विक कारण होते हैं, जो भगवान के सर्वोच्च विधान से जुड़े होते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, खासकर पुराणों और उपनिषदों में यह देखा गया है कि हर व्यक्ति की किस्मत कर्मों पर आधारित होती है, और यह कर्म ही मनुष्य की दिशा तय करते हैं, न कि समय के साथ उनके कर्मों का उन्नति।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में यह माना जाता है कि कर्मों का फल व्यक्ति की ईश्वर की शरणागति और आत्मा के शुद्धिकरण पर निर्भर करता है, न कि किसी को जल्दी किस्मत का निर्णय प्राप्त होने की इच्छा पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क अव्यवस्थित और गलत है, क्योंकि किस्मत का निर्धारण ईश्वर की योजना और मानव के कर्मों से होता है, न कि किसी तात्कालिक वाक्य से।

आयत 17

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) जैसी जैसी बातें ये लोग करते हैं उन पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो बड़े क़ूवत वाले थे।"

चुना गया न्याय तत्वः
उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि पैग़म्बर को इन काफ़िरों की बातों पर धैर्य रखना चाहिए और दाऊद का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, जो शौर्य और धैर्य में अद्वितीय थे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि काफ़िरों की बातों पर धैर्य रखना चाहिए, जैसा कि दाऊद ने किया था। यह उदाहरण काफ़िरों के साथ संतुलित व्यवहार को प्रस्तुत करता है, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या कोई व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार सही निर्णय ले सकता है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में भी धैर्य और शौर्य की एक महानता है। भगवद गीता में श्री कृष्ण अर्जुन को जीवन की कठिनाइयों पर संयम रखने की सलाह देते हैं, ताकि वे अपनी भूमिका को समझ सकें और सही निर्णय ले सकें।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में, इस प्रकार के उदाहरणों का उपयोग व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक स्थिति को परिष्कृत करने के लिए किया जाता है। दाऊद का उदाहरण यह दर्शाता है कि किसी भी संकट का सही तरीके से सामना किया जाए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह उदाहरण आदर्श है, लेकिन इसे सटीक रूप से लागू करना व्यक्ति की बुद्धिमत्ता और परिस्थिति पर निर्भर करता है।

आयत 18

आयत का अनुवादः
"हमने पहाड़ों को भी ताबेदार बना दिया था कि उनके साथ सुबह और शाम (ख़ुदा की) तस्बीह करते थे।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यहाँ यह कहा गया है कि पहाड़ों को दाऊद की तस्बीह के साथ जोड़ा गया था, जो भौतिक संसार के अनौपचारिक नियमों को चुनौती देता है।

- **हेतु (Reason):**
  यहाँ यह तर्क दिया गया है कि पहाड़ों का तस्बीह करना एक अलौकिक घटना है, जो यह संकेत देती है कि सारी सृष्टि ईश्वर के प्रति समर्पित है। यह तर्क पौराणिक और धार्मिक दृष्टिकोण से ही सही हो सकता है, लेकिन इसका तात्त्विक और भौतिक आधार नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि सभी प्राणी और प्रकृति के तत्व ईश्वर की शक्ति के द्योतक होते हैं। उदाहरण स्वरूप, पतंजलि योग सूत्र में यह बताया गया है कि समस्त संसार योग के माध्यम से ईश्वर के समीप जा सकता है।

- **उपनया (Application):**
  यह आयत भले ही धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो, लेकिन न्याय दर्शन में इसे प्रमाणित किया जाना चाहिए, क्योंकि पहाड़ों और अन्य प्राकृतिक तत्वों की अपनी सीमाएँ हैं और तर्क के आधार पर इस घटनाक्रम को वैज्ञानिक रूप से नहीं समझा जा सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य हो सकती है, लेकिन इसे न्यायिक और भौतिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

आयत 19

आयत का अनुवाद:
"और परिन्दे भी (यादे ख़ुदा के वक़्त सिमट) आते और उनके फरमाबरदार थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में कहा गया है कि परिंदे दाऊद की तस्बीह में शामिल होते थे और उनके आदेश का पालन करते थे।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यह घटना अलौकिक है, लेकिन इसका भौतिक और तात्त्विक आधार नहीं है। परिंदों के आदेशों का पालन करना संभव नहीं है, क्योंकि यह प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करता है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, समस्त जीवों और तत्वों की स्वतंत्रता और अपनी प्राकृतिक वृत्तियों के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता मानी जाती है।
- **उपनया (Application):**
  यह तर्क भले ही धार्मिक दृष्टिकोण से आकर्षक हो, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार प्राकृतिक घटनाएँ और जीवों के कार्य उनके अपने स्वभाव और सिद्धांतों से नियंत्रित होते हैं, न कि अलौकिक आदेशों से।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत भले ही धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो, लेकिन इसे तात्त्विक और न्यायिक दृष्टिकोण से सत्यापित करना कठिन है।

आयत 20

आयत का अनुवाद:
"और हमने उनकी सल्तनत को मज़बूत कर दिया और हमने उनको हिकमत और बहस के फैसले की क़ूवत अता फरमायी थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि दाऊद को हिकमत और न्याय के फैसले की ताकत दी गई थी।

- **हेतु (Reason):**

यह तर्क दिया गया है कि दाऊद को विशेष अधिकार और शक्ति दी गई थी, लेकिन इसका भौतिक आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में हिकमत और न्याय का बल कर्मों, ज्ञान और आंतरिक शुद्धता से संबंधित होता है।

- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में यह माना जाता है कि व्यक्ति की शक्ति और तर्क उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं और नैतिक स्थिति पर निर्भर करते हैं। दाऊद की शक्ति को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है, लेकिन यह न्यायिक सिद्धांत से प्रमाणित नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से सुसंगत हो सकती है, लेकिन न्याय दर्शन के आधार पर इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

सारांश तालिका

आयत संख्या	आलोचना का प्रमुख बिंदु	न्यायिक आलोचना
15	**भविष्यवाणी का बिना प्रमाण होना**	**बिना प्रमाण की भविष्यवाणी अव्यवस्थित है**
16	**किस्मत की जल्दी मांगने का तर्क**	**कर्मों के अनुसार फल तय होता है, समय पर नहीं**
17	**दाऊद का उदाहरण प्रस्तुत करना**	**आदर्श है, लेकिन सटीक निर्णय पर निर्भर**
18	**पहाड़ों का तस्बीह करना**	**धार्मिक, लेकिन भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं**
19	**परिंदों का आदेश पालन करना**	**प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध**

20	**दाऊद को हिकमत और शक्ति देना**	**धार्मिक दृष्टिकोण से सही, लेकिन न्याय से असंगत**

निष्कर्ष

इन आयतों में दिये गए धार्मिक तर्क और घटनाओं को न्याय दर्शन और भौतिक दृष्टिकोण से प्रमाणित करना मुश्किल है, क्योंकि यह तर्कों के बजाय धार्मिक विश्वासों और अलौकिक घटनाओं पर आधारित हैं।

आयत 21-25 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) क्या तुम तक उन दावेदारों की भी ख़बर पहुँची है कि जब वह हुजरे (इबादत) की दीवार फाँद पड़े।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह बताया गया है कि दावेदारों ने दाऊद के स्थान तक पहुँचने के लिए दीवार को फाँद लिया, जो एक अलौकिक या असामान्य घटना के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- **हेतु (Reason):**
  यह घटना धार्मिक संदर्भ में एक संदेश देती है, लेकिन इससे जुड़ा कोई भौतिक या न्यायिक आधार नहीं है। दीवार को फाँदने का व्यवहार तर्क के बिना दर्शाया गया है, जो यह संकेत करता है कि यह अलौकिक तत्व है, जो भौतिक नियमों से मेल नहीं खाता।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, वास्तविकता और भौतिक नियमों को ध्यान में रखते हुए घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है। यहाँ पर दीवार को फाँदने की घटना को तर्क से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में किसी भी घटना की सत्यता को प्रमाण और तर्क से साबित किया जाना चाहिए। इस प्रकार की घटना को प्रमाणित करना कठिन है, क्योंकि यह प्राकृतिक और भौतिक नियमों से बाहर की घटना प्रतीत होती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह घटना अलौकिक रूप से देखी जा सकती है, लेकिन इसे तर्क और प्रमाण से प्रमाणित करना असंभव है।

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"जब दाऊद के पास आ खड़े हुए तो वह उनसे डर गए, उन लोगों ने कहा कि आप डरें नहीं (हम दोनों) एक मुक़द्दमें के फ़रीक़ैन हैं कि हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हमारे दरम्यान ठीक-ठीक फैसला कर दीजिए और इन्साफ से ने गुज़रिये और हमें सीधी राह दिखा दीजिए।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  दाऊद से जुड़े हुए विवाद का समाधान पूछा जाता है। यहाँ दो पक्ष दाऊद से न्याय की अपील कर रहे हैं, जो कि एक न्यायिक स्थिति है।
- **हेतु (Reason):**
  दोनों पक्ष दाऊद से न्याय की अपील करते हैं, जो यह बताता है कि दाऊद न्याय के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। हालांकि, यह न्यायिक निर्णय बिना पर्याप्त तथ्यों के आधार पर लिया जाता है, जो न्याय दर्शन के नियमों के खिलाफ है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय न्याय में, किसी भी विवाद का निपटारा तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर किया जाता है। यहाँ पर दाऊद ने बिना पूरी जानकारी के फैसला किया, जो न्यायिक प्रक्रिया के खिलाफ है।
- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में किसी भी मामले का हल तथ्यों के आधार पर और निष्पक्ष रूप से किया जाना चाहिए। दाऊद का बिना सुनवाई किए ही फैसला लेना न्यायिक रूप से उचित नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है, क्योंकि निर्णय बिना पर्याप्त तथ्य के लिया गया है।

आयत 23

आयत का अनुवाद:
"(मुराद ये हैं कि) ये (शख़्स) मेरा भाई है और उसके पास निनान्नवे दुम्बियाँ हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुम्बी है, उस पर भी ये मुझसे कहता है कि ये दुम्बी भी मुझी को दे दें और बातचीत में मुझ पर सख़्ती करता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यहाँ पर एक पक्ष यह आरोप लगा रहा है कि उसका भाई उसके पास की एकमात्र दुम्बी को भी मांग रहा है, जो एक अन्यायपूर्ण स्थिति का संकेत देता है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क किया गया है कि एक पक्ष ने दूसरे पर ज़्यादती की है, लेकिन यह तर्क बिना प्रमाण के किया जा रहा है। न्याय दर्शन में यह आवश्यक होता है कि आरोपों का समर्थन तथ्यों और प्रमाणों से किया जाए, जो यहाँ पर नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय न्याय में, किसी भी मामले में पक्षकारों को सबूत देने का अधिकार होता है। अगर यह मामला भारतीय न्याय प्रक्रिया के तहत होता तो इस तरह के आरोपों को प्रमाणित करने के लिए साक्ष्य की आवश्यकता होती।
- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, विवाद का समाधान केवल तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाता है। यहाँ पर यह उदाहरण बिना प्रमाण के आरोप लगाने का प्रतीक है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क प्रमाणित नहीं किया गया है, और इसे न्यायिक दृष्टिकोण से सही नहीं माना जा सकता।

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"दाऊद ने (बग़ैर इसके कि मुद्दा आलैह से कुछ पूछें) कह दिया कि ये जो तेरी दुम्बी माँग कर अपनी दुम्बियों में मिलाना चाहता है तो ये तुझ पर ज़ुल्म करता है और अक्सर शुरका (की) यकीऩन (ये हालत है कि) एक दूसरे पर ज़ुल्म किया करते हैं मगर जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए (वह ऐसा नहीं करते) और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं (ये सुनकर दोनों चल दिए) और अब दाऊद ने समझा कि हमने उनका इम्तिहान लिया (और वह नाकाम रहे)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  दाऊद ने बिना पूरी जांच किए एक निर्णय लिया और यह समझा कि यह एक इम्तिहान था।
- **हेतु (Reason):**
  दाऊद का यह निर्णय बिना सभी तथ्यों को ध्यान में रखे हुआ था। न्याय दर्शन में यह आवश्यक है कि किसी भी निर्णय से पहले सभी पक्षों को सुना जाए और फिर तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाए।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय न्याय में, किसी भी विवाद में सभी पक्षों को सुनने के बाद ही निर्णय लिया जाता है। यहाँ पर दाऊद ने एक पक्ष को सुने बिना ही निर्णय लिया।
- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी मामले में निष्पक्षता और पूरी जांच आवश्यक होती है। दाऊद का निर्णय बिना पर्याप्त जानकारी के लिया गया।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह निर्णय न्यायिक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि किसी भी विवाद का समाधान पूरी जानकारी और निष्पक्षता से किया जाना चाहिए।

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"तो हमने उनकी वह ग़लती माफ़ कर दी और इसमें शक नहीं कि हमारी बारगाह में उनका तक़र्रुब और अंजाम अच्छा हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में कहा गया है कि दाऊद की गलती माफ़ कर दी गई और अंत में उन्हें अच्छा परिणाम मिला।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क किया गया है कि ग़लतियों को माफ़ करना और अच्छे परिणाम प्राप्त करना ईश्वर की इच्छा से जुड़ा हुआ है। हालांकि, यह धार्मिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य हो सकता है, लेकिन इसे न्यायिक सिद्धांतों से प्रमाणित करना मुश्किल है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय न्याय में माफी एक सशक्त अवधारणा है, लेकिन यह तब मानी जाती है जब अपराधी के खिलाफ सबूतों और परिस्थितियों का निष्पक्ष विश्लेषण किया जाए।
- **उपनया (Application):**
  न्याय दर्शन में माफी और सजा का आधार न्यायिक प्रक्रिया और निष्कर्ष पर निर्भर करता है। यहाँ पर गलती को माफ किया गया है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन और भौतिक सिद्धांतों के आधार पर इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

सारांश तालिका

आयत संख्या	आलोचना का प्रमुख बिंदु	न्यायिक आलोचना
21	**दीवार को फाँदने का अलौकिक घटना**	**बिना तर्क के अलौकिक घटनाएँ**
22	**बिना पूरी जानकारी के निर्णय लेना**	**निर्णय निष्पक्षता और जानकारी से किए जाने चाहिए**
23	**बिना प्रमाण के आरोप लगाना**	**आरोपों का समर्थन तथ्यों से किया जाना चाहिए**
24	**बिना सुनवाई किए फैसला लेना**	**निष्पक्षता और पूरी जानकारी की आवश्यकता**
25	**गलती को माफ़ करना**	**माफी का आधार बिना तर्क और साक्ष्य के**

निष्कर्ष

यह आयतें तर्क और न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं, क्योंकि इनमें बिना पर्याप्त जानकारी और प्रमाण के निर्णय लिया गया है।

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"(हमने फरमाया) ऐ दाऊद हमने तुमको ज़मीन में (अपना) नाएब क़रार दिया तो तुम लोगों के दरम्यिान बिल्कुल ठीक फैसला किया करो और नफ़सियानी ख़्वाहिश की पैरवी न करो बसा ये पीरों तुम्हें ख़ुदा की राह से बहका देगी इसमें शक नहीं कि जो लोग ख़ुदा की राह में भटकते हैं उनकी बड़ी सख़्त सज़ा होगी क्योंकि उन लोगों ने हिसाब के दिन (क़यामत) को भुला दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रामाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दाऊद को नाएब (प्रतिनिधि) के रूप में फैसला करने का अधिकार दिया गया है, और वह केवल सही मार्ग पर ही चलें।**
- **हेतु (Reason): यह आयत स्पष्ट रूप से कहती है कि दाऊद को सही फैसले करने के लिए नियुक्त किया गया है, और यह चेतावनी भी देती है कि जिन लोगों ने ख़ुदा की राह को भुला दिया, उन्हें कड़ी सजा मिलेगी। लेकिन यह दावा बिना ठोस प्रमाण और ऐतिहासिक साक्ष्य के किया गया है, जिससे यह दावा सार्वभौमिक या अकाट्य सत्य नहीं लगता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, विशेषतः न्याय और वेदांत, में निर्णय के लिए केवल स्वप्न, इच्छा या कर्मों के फल की बजाय, साक्ष्य और तर्क का पालन किया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रामाण (ज्ञान के स्रोत) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें वास्तविक प्रमाण, उदाहरण या तर्क की कमी है।**

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"और हमने आसमान और ज़मीन और जो चीज़ें उन दोनों के दरम्यिान हैं बेकार नहीं पैदा किया, ये उन लोगों का ख़्याल है जो काफ़िर हो बैठे तो जो लोग दोज़ख़ के मुनकिर हैं उन पर अफ़सोस है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आसमान और ज़मीन और उनके बीच की सारी चीज़ें बेकार नहीं पैदा की गईं।**

- **हेतु (Reason): यह आयत प्राकृतिक सृष्टि के उद्देश्यपूर्ण होने की बात करती है, लेकिन यह दावा बिना किसी वैज्ञानिक या अनुभवजन्य साक्ष्य के प्रस्तुत किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांक्य और वैषेशिक में, ब्रह्माण्ड का उद्देश्य और कारण स्पष्ट रूप से तर्क और सिद्धांत के आधार पर समझा जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय (ज्ञान के वस्तु) का उल्लंघन करती है क्योंकि इसका दावा बिना किसी ठोस प्रमाण या विश्लेषण के किया गया है।**

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"क्या जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनको हम (उन लोगों के बराबर) कर दें जो रूए ज़मीन में फसाद फैलाया करते हैं या हम परहेज़गारों को मिसल बदकारों के बना दें?"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईमान लाने और अच्छे कर्म करने वालों को बुरे लोगों के बराबर नहीं किया जा सकता।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक नैतिक दृषटिकोन से प्रस्तुत की गई है कि अच्छे और बुरे लोगों के बीच अंतर किया जाएगा, लेकिन यह बात न्याय और तर्क के हिसाब से एक सामान्य समझ के विपरीत है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में, कर्म और योग के सिद्धांत के अनुसार, अच्छे कर्म करने वाले को निश्चित रूप से उसके कर्मों का परिणाम मिलता है। यह आयत एक नैतिक अंतर को स्पष्ट करती है, लेकिन इसके आधार पर भी उचित प्रमाण की कमी है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत हेतु (कारण) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें बुरे और अच्छे कर्मों के बीच अंतर को सिर्फ परिकल्पना और सामान्यत: नैतिक आधार से प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 29

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) किताब (कुरान) जो हमने तुम्हारे पास नाज़िल की है (बड़ी) बरकत वाली है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले नसीहत हासिल करें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुरान को एक अत्यधिक लाभकारी और प्रभावशाली किताब के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत कुरान की आयतों में ग़ौर करने और समझने के लिए प्रेरित करती है, लेकिन इसमें यह दावे बिना किसी ठोस और अनुभवजन्य साक्ष्य के किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, गीता और अन्य ग्रंथों की वचनबद्धता और विश्वसनीयता सत्य और तर्क के सिद्धांतों पर आधारित है, जिनका कोई भी प्रतिकूल उदाहरण नहीं मिलता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण (ज्ञान के स्रोत) के सिद्धांत को कमजोर करती है क्योंकि इसमें तर्क, उदाहरण या किसी अन्य अनुभवजन्य आधार का प्रयोग नहीं किया गया है।**

आयत 30

आयत का अनुवाद:
"और हमने दाऊद को सुलेमान (सा बेटा) अता किया (सुलेमान भी) क्या अच्छे बन्दे थे।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दाऊद को सुलेमान जैसा अच्छा बेटा अता किया गया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत स्पष्ट करती है कि दाऊद को सुलेमान जैसा बेटा मिला, लेकिन यह दावा सिर्फ धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है, बिना किसी ऐतिहासिक या तर्कसंगत प्रमाण के।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, पौराणिक कथाएँ और वचन अपने समय और स्थान के साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित होती हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति (सार्वभौमिकता) के सिद्धांत को नकारती है, क्योंकि इसका दावा बिना किसी प्रमाण के किया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	प्रामाण (Pramana)	दाऊद के फैसले करने का अधिकार बिना ठोस प्रमाण के दिया गया।
27	प्रमेय (Prameya)	प्राकृतिक सृष्टि के उद्देश्यपूर्ण होने का दावा बिना वैज्ञानिक प्रमाण के।
28	हेतु (Hetu)	अच्छे और बुरे कर्मों का अंतर बिना ठोस प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।
29	प्रमाण (Pramana)	कुरान को प्रभावशाली बनाने का दावा बिना प्रमाण और तर्क के।
30	व्याप्ति (Vyapti)	दाऊद को सुलेमान जैसा बेटा देना बिना ऐतिहासिक प्रमाण के।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दावे किए गए हैं, जो बिना ठोस प्रमाण, ऐतिहासिक साक्ष्य या तर्क के प्रस्तुत किए गए हैं। यह आयतें न्याय दर्शन के सिद्धांतों, जैसे प्रामाण, प्रमेय, हेतु, और व्याप्ति के विपरीत हैं। इन दावों में तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रमाणित और कमजोर विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकते।

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"बेशक वह हमारी तरफ रूजू करने वाले थे, इत्तेफाक़न एक दफ़ा तीसरे पहर को ख़ासे के असील घोड़े उनके सामने पेश किए गए।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत बताती है कि सुलेमान को घोड़े पेश किए गए, लेकिन इस घटना का कोई ठोस प्रमाण या व्याख्या नहीं दी जाती।
- **हेतु (Reason):** यह आयत किसी प्राकृतिक घटना या प्रमाण को प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि यह एक कथन के रूप में दी गई है, जिसका वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, घटनाओं को प्रमाण और अनुभव के आधार पर ही समझा जाता है। जैसे पाणिनि के व्याकरण में व्याख्या दी जाती है, वही सत्य माना जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय (ज्ञान के वस्तु) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसका दावा बिना किसी ठोस प्रमाण या व्याख्या के किया गया है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:
"तो देखने में उलझे के नवाफिल में देर हो गयी जब याद आया तो बोले कि मैंने अपने परवरदिगार की याद पर माल की उल्फ़त को तरजीह दी यहाँ तक कि आफ़ताब (मग़रिब के) पर्दे में छुप गया।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत सुलेमान के द्वारा एक भूल या चूक को प्रस्तुत करती है जिसमें वह अपनी संपत्ति को ज्यादा महत्त्व देते हैं।
- **हेतु (Reason):** आयत में एक कारण (हेतु) के रूप में यह बताया गया है कि वह अपना ध्यान ईश्वर से हटा कर सांसारिक वस्तुओं में लगा बैठे थे। यह एक नैतिक शिक्षा को प्रदर्शित करता है, लेकिन यह भी बिना ठोस प्रमाण या तर्क के किया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में श्री कृष्ण ने भी अर्जुन को कर्म और भक्ति के बीच संतुलन बनाए रखने की शिक्षा दी है, जो इस आयत के विचार से मेल खाता है, लेकिन यह भी केवल नैतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत हेतु (कारण) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल एक नैतिक शिक्षा देने के लिए प्रस्तुत की गई है, बिना किसी ठोस प्रमाण या तर्क के।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"(तो बोले अच्छा) इन घोड़ों को मेरे पास वापस लाओ, (जब आए) तो (देर के कफ़्फ़ारा में) घोड़ों की टाँगों और गर्दनों पर हाथ फेर (काट) ने लगे।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सुलेमान ने घोड़ों की टाँगों और गर्दनों पर हाथ फेरने का आदेश दिया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक उपमान (समानता) का उपयोग करती है, जहां घोड़ों के साथ व्यवहार की तुलना किसी पवित्र कार्य या कर्म से की जाती है। लेकिन इसमें यह नहीं बताया जाता कि यह कार्य किस कारण से किया गया था।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, पवित्र कार्यों के दौरान किसी भी तत्व का उपयोग स्पष्ट और तर्कसंगत कारण से किया जाता है, जैसे योग और साधना में हर क्रिया का उद्देश्य होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत उपमान (समानता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह कार्य बिना किसी स्पष्ट तर्क या उद्देश्य के प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"और हमने सुलेमान का इम्तेहान लिया और उनके तख़्त पर एक बेजान धड़ लाकर गिरा दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सुलेमान के तख़्त पर एक बेजान धड़ गिराया गया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक कथात्मक घटना को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत आधार या प्रमाण नहीं दिया जाता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना या कर्म का उद्देश्य और कारण स्पष्ट रूप से बताना आवश्यक होता है। जैसे वेदांत में कर्म और फल का सिद्धांत समझाया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय (ज्ञान के वस्तु) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका दावा बिना किसी प्रमाण या तर्क के किया गया है।**

आयत 35

आयत का अनुवाद:
"फिर (सुलेमान ने मेरी तरफ) रूझू की (और) कहा परवरदिगार मुझे बख़्श दे और मुझे वह मुल्क अता फरमा जो मेरे बाद किसी के वास्ते शायाँह न हो इसमें तो शक नहीं कि तू बड़ा बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सुलेमान ने ईश्वर से यह प्रार्थना की कि उन्हें एक ऐसा राज्य दिया जाए, जो उनके बाद किसी और के लिए नहीं हो।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक शाही सत्ता के विचार को प्रस्तुत करती है, जो केवल सुलेमान के लिए विशेष रूप से निर्धारित है। हालांकि, इसका तात्त्विक और नैतिक आधार स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, राजा का कर्तव्य जनता के प्रति होता है, और राज्य का विचार व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक होता है। जैसे मनुस्मृति में राजा को जनता के कल्याण के लिए कर्तव्यबद्ध बताया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति (सार्वभौमिकता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक व्यक्तिगत स्वार्थ को सर्वसामान्य रूप से प्रस्तुत करती है, जो सार्वभौमिक न्याय के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	**प्रमेय (Prameya)**	**घोड़ों के पेश करने का दावा बिना प्रमाण के।**
32	**हेतु (Hetu)**	**नैतिक शिक्षा देने का प्रयास, लेकिन बिना तर्क के।**
33	**उपमान (Upamana)**	**घोड़ों की टाँगों पर हाथ फेरने की घटना बिना तर्क के प्रस्तुत की गई।**
34	**प्रमेय (Prameya)**	**घटना का वर्णन बिना प्रमाण के किया गया।**

35	**व्याप्ति (Vyapti)**	**व्यक्तिगत स्वार्थ को सार्वभौमिक न्याय के रूप में प्रस्तुत किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कथात्मक घटनाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है। ये आयतें प्रमेय, हेतु, उपमान और व्याप्ति के सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं, क्योंकि इनमें या तो तर्क की कमी है या कथाओं का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। इस प्रकार, ये दावे तात्त्विक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकते।

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"तो हमने हवा को उनका ताबेए कर दिया कि जहाँ वह पहुँचना चाहते थे उनके हुक्म के मुताबिक़ धीमी चाल चलती थी।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत हवा के सुलेमान के नियंत्रण में होने का दावा करती है, जिससे वह अपनी इच्छा अनुसार उसे नियंत्रित कर सकते थे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह प्राकृतिक घटना (हवा) को केवल सुलेमान के हुक्म के अधीन बताती है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से असंगत है। हवा को नियंत्रण में रखने का दावा बिना किसी भौतिक या वैज्ञानिक कारण के किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में प्रकृति के नियमों का पालन करना आवश्यक माना जाता है। जैसे योग दर्शन में प्राणवायु के नियंत्रण को कठिन परिश्रम और साधना के माध्यम से ही संभव बताया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति (सार्वभौमिकता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह प्राकृतिक नियमों को बिना किसी ठोस तर्क के मानव इच्छा से नियंत्रित कर देती है।**

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"और (इसी तरह) जितने शयातीन (देव) इमारत बनाने वाले और ग़ोता लगाने वाले थे, सबको ताबेए कर दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि शयातीन (देव) सुलेमान के नियंत्रण में थे, जो इमारतें बनाते और ग़ोता लगाते थे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी प्रमाण या तर्क के बिना यह दावा किया गया है कि शयातीन ने इमारतों का निर्माण किया और ग़ोता लगाया।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, कार्यों और घटनाओं को स्पष्ट और सटीक प्रमाणों के आधार पर ही समझा जाता है। जैसे भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा कि 'योगेश्वर' के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय (ज्ञान के वस्तु) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें घटनाओं को बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 38

आयत का अनुवाद:
"सबको (ताबेए कर दिया और इसके अलावा) दूसरे देवों को भी जो ज़ंज़ीरों में जकड़े हुए थे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में अन्य देवों को भी सुलेमान के आदेश के तहत ज़ंजीरों में जकड़ा गया बताया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक कारण (हेतु) प्रस्तुत करती है, लेकिन यह कारण बिना किसी तर्क या व्याख्या के है। भारतीय दर्शन में हर कारण के साथ उसका उद्देश्य और परिणाम स्पष्ट करना जरूरी है, जो इस आयत में गायब है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में देवताओं का आह्वान और उनकी शक्ति का विस्तार किया जाता है, लेकिन उनके कार्यों को हमेशा किसी नैतिक और तार्किक उद्देश्य के साथ जोड़ा जाता है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत हेतु (कारण) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक कारण प्रस्तुत करती है, लेकिन उस कारण का उद्देश्य और तर्क स्पष्ट नहीं है।**

आयत 39

आयत का अनुवाद:
"ऐ सुलेमान, ये हमारी बेहिसाब अता है, पस (उसे लोगों को देकर) एहसान करो या (सब) अपने ही पास रखो।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान को एक बेहिसाब कृपा दी जाती है, जिसे वह लोगों को दे सकते हैं या स्वयं रख सकते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें भगवान की कृपा को केवल एक व्यक्ति (सुलेमान) तक सीमित किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में कृपा और आशीर्वाद का विचार सार्वभौमिक होता है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि भगवान की कृपा सभी जीवों पर समान रूप से पड़ती है और यह किसी विशेष व्यक्ति तक सीमित नहीं होती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति (सार्वभौमिकता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह कृपा को एक व्यक्ति तक सीमित करती है, जबकि वह सभी पर समान रूप से होनी चाहिए।**

आयत 40

आयत का अनुवाद:
"और इसमें शक नहीं कि सुलेमान की हमारी बारगाह में कुर्ब व मज़ेलत और उमदा जगह है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि सुलेमान को भगवान के पास एक उच्च स्थान दिया गया है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कोई प्रमाण नहीं दिया जाता कि क्यों सुलेमान को यह स्थान दिया गया। यह केवल एक कथन है जो बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, हर व्यक्ति को न्याय और कर्म के आधार पर स्थान मिलता है, जैसा कि भगवद गीता में कर्मफल का सिद्धांत बताया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय (ज्ञान के वस्तु) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी तर्क और प्रमाण के एक व्यक्ति को उच्च स्थान देती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	**व्याप्ति (Vyapti)**	**हवा के नियंत्रण का दावा बिना वैज्ञानिक आधार के।**
37	**प्रमेय (Prameya)**	**शयातीन के कार्यों का वर्णन बिना प्रमाण के किया गया।**
38	**हेतु (Hetu)**	**कारण का प्रस्तुत किया गया बिना स्पष्ट उद्देश्य के।**
39	**व्याप्ति (Vyapti)**	**कृपा को एक व्यक्ति तक सीमित किया गया, जबकि यह सार्वभौमिक होनी चाहिए।**
40	**प्रमेय (Prameya)**	**उच्च स्थान का दावा बिना किसी प्रमाण के।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कथात्मक घटनाएँ और व्यक्तिगत दावों का प्रस्तुत किया गया है, जिनका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है। ये आयतें व्याप्ति, प्रमेय और हेतु के सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं, क्योंकि इनमें प्राकृतिक घटनाओं को बिना वैज्ञानिक आधार और नैतिक उद्देश्य के प्रस्तुत किया गया है।

आयत 41

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हमारे (ख़ास) बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्होंने अपने परवरदिगार से फरियाद की कि मुझको शैतान ने बहुत अज़ीयत और तकलीफ पहुँचा रखी है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में अय्यूब की तकलीफ और शैतान से परेशान होने का ज़िक्र किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें शैतान की तकलीफ देने की भूमिका का उल्लेख है, लेकिन बिना किसी तर्क या वैज्ञानिक पुष्टि के इसे पेश किया गया है। भारतीय दर्शन में, किसी भी धार्मिक या आध्यात्मिक घटना के लिए प्रमाण प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।**
- **उदाहरण (Example): उपनिषदों में देवताओं और असुरों के बीच संघर्षों का ज़िक्र तात्त्विक दृष्टिकोण से किया गया है, जहाँ प्रत्येक घटना को न्यायसंगत कारणों के माध्यम से समझाया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण (सत्य ज्ञान के स्रोत) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें शैतान की तकलीफ देने की भूमिका बिना किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण के प्रस्तुत की गई है।**

आयत 42

आयत का अनुवाद:
"तो हमने कहा कि अपने पाँव से (ज़मीन को) ठुकरा दो और चश्मा निकाला तो हमने कहा (ऐ अय्यूब) तुम्हारे नहाने और पीने के वास्ते ये ठन्डा पानी (हाज़िर) है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रामाणिकता (Pramanikata)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में अय्यूब को पानी से नहाने और पीने की अनुमति दी जाती है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत प्रामाणिकता के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी ठोस तर्क के अय्यूब के लिए एक चमत्कारी समाधान प्रस्तुत करती है, जो सामान्य जीवन में वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से समझ में नहीं आता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, शरीर की शुद्धि और उपचार के लिए साधना और आयुर्वेद का मार्गदर्शन किया जाता है, जो तात्त्विक रूप से प्रमाणित और संतुलित होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रामाणिकता (सत्य के प्रमाण) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें बिना किसी तर्क के एक चमत्कारी उपाय की बात की गई है।

आयत 43

आयत का अनुवाद:
"और हमने उनको और उनके लड़के वाले और उनके साथ उतने ही और अपनी ख़ास मेहरबानी से अता किए।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत बताती है कि अय्यूब को भगवान की मेहरबानी से परिवार और बच्चों के साथ वरदान दिया गया।
- **हेतु (Reason):** यह आयत प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें इस मेहरबानी के कारण और उद्देश्य का कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में श्री कृष्ण ने भगवान की कृपा को कर्म और न्याय के आधार पर माना है, जिससे हर व्यक्ति को उसका फल मिलता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि बिना किसी प्रमाण या उद्देश्य के इसे प्रस्तुत किया गया है।

आयत 44

आयत का अनुवाद:
"और हमने कहा ऐ अय्यूब तुम अपने हाथ से सींकों का मट्ठा लो (और उससे अपनी बीवी को) मारो अपनी क़सम में झूठे न बनो हमने कहा अय्यूब को यक़ीनन साबिर पाया वह क्या अच्छे बन्दे थे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में अय्यूब को अपनी बीवी को सींकों का मट्ठा से मारने का आदेश दिया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत हेतु (कारण) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें दी गई कार्रवाई (बीवी को मारना) का कारण और उद्देश्य पूरी तरह से अस्पष्ट है। भारतीय दर्शन में किसी भी कार्रवाई को तर्कसंगत कारणों के आधार पर किया जाता है, और यह कार्य एक नकारात्मक संदेश देता है।**
- **उदाहरण (Example): मनुस्मृति में कहा गया है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, लेकिन बिना किसी कारण के हिंसा की स्वीकृति नहीं दी जाती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत हेतु (कारण) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के हिंसा को प्रोत्साहित किया गया है।**

आयत 45

आयत का अनुवाद:
"बेषक वह हमारी बारगाह में बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इब्राहीम और इसहाक़ और बेशक वह (हमारी बारगाह में) बड़े झुकने वाले थे।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब को ईश्वर के प्रति झुकने वाले और श्रेष्ठ बंदे बताया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह ईश्वर के प्रति झुकाव को केवल कुछ व्यक्तियों तक सीमित करती है, जबकि भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि सभी जीवों को ईश्वर के प्रति आदर और झुकाव रखना चाहिए।**

- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि 'जो मुझे सभी प्राणियों में देखता है, वही मेरा सच्चा भक्त है।'**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति (सार्वभौमिकता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें विशेष व्यक्तियों को ईश्वर के प्रति झुकाव का दर्जा दिया गया है, जबकि यह सभी के लिए समान रूप से होना चाहिए।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	**प्रमाण (Pramana)**	**शैतान की भूमिका का ज़िक्र बिना प्रमाण के।**
42	**प्रामाणिकता (Pramanikata)**	**बिना तर्क के चमत्कारी उपाय प्रस्तुत किया गया।**
43	**प्रमेय (Prameya)**	**मेहरबानी का कारण अस्पष्ट है।**
44	**हेतु (Hetu)**	**बिना किसी तर्क के हिंसा को प्रोत्साहित किया गया।**
45	**व्याप्ति (Vyapti)**	**ईश्वर के प्रति झुकाव को कुछ व्यक्तियों तक सीमित किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक घटनाओं और कार्यों को प्रस्तुत किया गया है जो बिना स्पष्ट तर्क और प्रमाण के हैं। ये आयतें प्रमाण, प्रामाणिकता, प्रमेय, हेतु और व्याप्ति के सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं, क्योंकि इनमें दी गई घटनाएँ और कार्य बिना वैज्ञानिक और तात्त्विक प्रमाण के प्रस्तुत की गई हैं, जो भारतीय दर्शन के सिद्धांतों के साथ संगत नहीं हैं।

आयत 46

आयत का अनुवाद:
"हमने उन लोगों को एक ख़ास सिफत आख़ेरत की याद से मुमताज़ किया था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि कुछ लोगों को विशेष रूप से आख़ेरत की याद से मुमताज़ (विशेष) किया गया।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया कि क्यों यह लोग विशेष रूप से याद किए गए हैं। भारतीय दर्शन में कोई भी धार्मिक घटना तर्कसंगत और प्रमाणिक कारणों के आधार पर प्रस्तुत की जानी चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जो लोग मेरी शरण में आते हैं, मैं उन्हें विशेष ध्यान देता हूँ, लेकिन इसका आधार स्पष्ट रूप से उनके कर्मों पर निर्भर होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण (Pramana) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी कारण या तर्क के विशेषता को प्रस्तुत करती है।**

आयत 47

आयत का अनुवाद:
"और इसमें शक नहीं कि ये लोग हमारी बारगाह में बरगुज़ीदा और नेक लोगों में हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कुछ लोगों को विशेष रूप से नेक और भगवान के करीब बताया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि इसमें इन लोगों की विशेषता को बिना किसी तर्क या कारण के प्रस्तुत किया गया है। किसी भी व्यक्ति या समुदाय की अच्छाई और विशेषता को प्रमाणित कारणों के आधार पर देखा जाता है, और यहां कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया।**
- **उदाहरण (Example): पाटञ्जलि योगसूत्रों में प्रत्येक व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार और आत्मज्ञान के लिए कर्म और साधना के आधार पर ही श्रेष्ठ माना गया है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें अच्छाई और विशेषता बिना किसी कारण या तर्क के घोषित की गई है।**

आयत 48

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) इस्माईल और इलियास और ज़ुलकिफ़्ल को (भी) याद करो और (ये) सब नेक बन्दों में हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में इस्माईल, इलियास और ज़ुलकिफ़्ल को नेक बंदों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इन व्यक्तियों की नेकता को बिना किसी तात्त्विक कारण या प्रमाण के पेश किया गया है। भारतीय दर्शन में कोई भी महान व्यक्ति या महात्मा केवल उनकी सत्यता और कर्मों के आधार पर महान माना जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि "जो सच्चे कर्म करते हैं, वही मेरी शरण में आते हैं", इसका मतलब है कि किसी भी व्यक्ति का आकलन उसके कर्मों से होता है, न कि किसी मान्यता से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें इन व्यक्तियों की नेकता को बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 49

आयत का अनुवाद:
"ये एक नसीहत है और इसमें शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए (आख़ेरत में) यक़ीनी अच्छी आरामगाह है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में परहेज़गारों के लिए अच्छी आरामगाह की बात की गई है, जो व्याप्ति के सिद्धांत के अनुसार एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत की गई है।**

- **हेतु (Reason): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि परहेज़गारों के लिए विशेष रूप से आरामगाह का वादा किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि हर व्यक्ति के कर्म और विचारों के आधार पर उसका फल तय होता है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि जो व्यक्ति अच्छे कर्म करता है, वह किसी भी परिस्थिति में श्रेष्ठ है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति (सार्वभौमिकता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें परहेज़गारों के लिए विशिष्ट पुरस्कार का उल्लेख है, जबकि यह सभी के लिए समान रूप से लागू होना चाहिए।**

आयत 50

आयत का अनुवाद:
"(यानि) हमेशा रहने के (बेहिश्त के) सदाबहार बाग़ात जिनके दरवाज़े उनके लिए (बराबर) खुले होगें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बहिश्त (स्वर्ग) के बारे में बात करती है, जिसमें सदाबहार बाग़ात और खुले दरवाज़े का वादा किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत के खिलाफ जाती है क्योंकि स्वर्ग के बारे में दी गई जानकारी कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। भारतीय दर्शन में स्वर्ग और नरक की अवधारणाएँ कर्म के आधार पर तात्त्विक दृष्टिकोण से समझाई जाती हैं।**
- **उदाहरण (Example): श्री कृष्ण ने भगवद गीता में कहा है कि जो अपनी कर्मविपाक से मुक्त होकर सर्वोच्च पद की ओर बढ़ता है, वही मोक्ष को प्राप्त करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें स्वर्ग और उसके सुखों के बारे में प्रमाणिक या तात्त्विक जानकारी नहीं दी गई है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

46	**प्रमाण (Pramana)**	**बिना प्रमाण के लोगों की विशेषता पेश की गई है।**
47	**प्रमाण (Pramana)**	**विशेषता को बिना कारण या तर्क के प्रस्तुत किया गया।**
48	**प्रमेय (Prameya)**	**नेकता को बिना तात्त्विक प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।**
49	**व्याप्ति (Vyapti)**	**परहेज़गारों के लिए विशेष पुरस्कार दिया गया, जो सभी पर लागू होना चाहिए।**
50	**प्रमेय (Prameya)**	**स्वर्ग के बारे में तात्त्विक या प्रमाणिक जानकारी नहीं दी गई।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वासों और विशेषताओं को बिना तात्त्विक प्रमाण या कारण के प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं। प्रमाण, प्रमेय, व्याप्ति और अन्य न्याय तत्वों के उल्लंघन के कारण, इन आयतों में दी गई अवधारणाएँ तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत हैं।

आयत 51

आयत का अनुवाद:
"और ये लोग वहाँ तकिये लगाए हुए (चैन से बैठे) होगें वहाँ (ख़ुद्दामे बेहिश्त से) कसरत से मेवे और शराब मँगवाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि स्वर्ग में लोग आराम से बैठकर शराब और मेवे का सेवन करेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह विचार प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि स्वर्ग के बारे में ऐसा विवरण न केवल अनुभवजन्य रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह भारत के योग और भक्ति दर्शन के दृष्टिकोण से भी विरोधाभासी है। भारतीय दर्शन में स्वर्ग का स्थान एक**

मानसिक स्थिति के रूप में होता है, जो आत्मा की शुद्धता और निर्विकल्प ध्यान से जुड़ा है, न कि भौतिक सुख-साधनों से।

- उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "स्वर्ग में जो सुख मिलता है, वह अस्थायी है, और सच्चा सुख आत्म-साक्षात्कार से आता है।" यहाँ यह विचार प्रस्तुत किया जाता है कि स्वर्ग में भौतिक सुख की कोई स्थायिता नहीं होती।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें स्वर्ग में भौतिक सुख की अवधारणा दी गई है, जो भारतीय दर्शन के अनुरूप नहीं है।

आयत 52

आयत का अनुवाद:
"और उनके पहलू में नीची नज़रों वाली (शरमीली) कमसिन बीवियाँ होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में स्वर्ग में एक विशेष प्रकार की सगाई का वर्णन किया गया है, जिसमें कमसिन बीवियाँ होंगी।
- **हेतु (Reason):** इस विचार में प्रमाण (Pramana) का उल्लंघन है, क्योंकि किसी स्वर्गीय अवस्था में मानवों के लिए भौतिक लक्षणों और सुखों का चित्रण किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन के अनुसार स्वर्ग एक अद्वितीय मानसिक और आत्मिक अवस्था है, जिसमें शरीर या भौतिक सुखों का कोई स्थान नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** संस्कृत के शास्त्रों में यह कहा गया है कि आत्मा को निर्वाण और मोक्ष की स्थिति में स्थिरता मिलती है, जिसमें शरीर या लिंग का कोई स्थान नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण (Pramana) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह स्वर्गीय अवस्था में शारीरिक सुख की परिभाषा देती है, जो भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण से असंगत है।

आयत 53

आयत का अनुवाद:
"(मोमिनों) ये वह चीज़ हैं जिनका हिसाब के दिन (क़यामत) के लिए तुमसे वायदा किया जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि क़यामत के दिन मोमिनों को ये भौतिक सुख प्राप्त होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह विचार व्याप्ति** (Vyapti) **के सिद्धांत से मेल नहीं खाता है, क्योंकि भौतिक सुख केवल एक अवस्था नहीं हो सकती है जो सभी मोमिनों के लिए समान रूप से लागू हो। व्याप्ति के सिद्धांत में यह कहा गया है कि सभी सत्य, कर्म और मानसिकता के आधार पर परिणाम होते हैं, न कि केवल धार्मिक विश्वासों के आधार पर।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "जो व्यक्ति अपने कर्मों में सत्य और योग के सिद्धांतों का पालन करता है, वह मोक्ष की प्राप्ति करता है, न कि केवल विश्वास के आधार पर।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति** (Vyapti) **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि मोमिनों को क़यामत में एक निश्चित भौतिक सुख मिलेगा, जो कर्मों और मानसिकता के वास्तविक परिणाम से नहीं जुड़ा है।**

आयत 54

आयत का अनुवाद:
"बेशक ये हमारी (दी हुयी) रोज़ी है जो कभी तमाम न होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जो ईश्वर द्वारा दी गई रोज़ी है, वह कभी समाप्त नहीं होगी।**
- **हेतु (Reason): यह विचार प्रमाण** (Pramana) **के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि किसी भी शाश्वत भौतिक वस्तु या स्थिति का अनुभव या प्रमाण देना असंभव है। भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि सभी भौतिक और मानसिक वस्तुएं परिवर्तनशील हैं और कोई भी स्थायिता नहीं होती।**

- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में कहा गया है कि "जो संसार में स्थिर रहने की कोशिश करता है, वह आत्मा के वास्तविक उद्देश्य से भटक जाता है।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण (Pramana) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें शाश्वत भौतिक सुख की अवधारणा दी गई है, जो भारतीय दर्शन के सिद्धांत के विरुद्ध है।**

आयत 55

आयत का अनुवाद:
"ये परहेज़गारों का (अन्जाम) है और सरकशों का तो यक़ीनी बुरा ठिकाना है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में परहेज़गारों के लिए एक अच्छा अंत और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना प्रस्तुत किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार व्याप्ति (Vyapti) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह केवल विश्वास और धार्मिक विचारों पर आधारित है। व्याप्ति के सिद्धांत में यह कहा गया है कि सभी व्यक्तियों के परिणाम उनके कर्मों, मानसिकता और अस्तित्व की स्थिति के आधार पर निर्धारित होते हैं, न कि केवल धार्मिक विश्वासों के आधार पर।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "जो व्यक्ति निष्कलंक कर्म करता है, वही सच्चे मार्ग पर चलने वाला होता है, न कि जो केवल विश्वास करता है।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि परहेज़गारों के लिए विशेष भौतिक परिणाम होंगे, जो कर्मों और मानसिकता के वास्तविक परिणाम से नहीं जुड़े हैं।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	**प्रमेय**	**स्वर्ग के बारे में भौतिक सुख की अवधारणा जो भारतीय दर्शन से मेल**

	(Prameya)	नहीं खाती।
52	प्रमाण (Pramana)	स्वर्गीय अवस्था में भौतिक सुख का वर्णन बिना तात्त्विक प्रमाण के।
53	व्याप्ति (Vyapti)	धार्मिक विश्वास के आधार पर स्वर्गीय सुख का अनुमान, जो कर्मों और मानसिकता से संबंधित नहीं है।
54	प्रमाण (Pramana)	शाश्वत भौतिक सुख का विचार जो भारतीय दर्शन के सिद्धांत से भिन्न है।
55	व्याप्ति (Vyapti)	कर्मों और मानसिकता से असंबद्ध विश्वासों के आधार पर भौतिक परिणामों का निर्धारण।

आयत 56

आयत का अनुवाद:
"जहन्नुम जिसमें उनको जाना पड़ेगा तो वह क्या बुरा ठिकाना है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि जहन्नुम एक बुरा ठिकाना है जिसमें लोग जाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह विचार प्रमाण** (Pramana) **के सिद्धांत से मेल नहीं खाता क्योंकि जहन्नुम जैसी स्थिति को प्रमाणित या अनुभवजन्य रूप से नहीं देखा जा सकता। भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि मुक्ति और स्वार्थ पर आधारित कर्मों के आधार पर फल होते हैं, न कि किसी स्वर्गीय या नर्कीय स्थान पर निर्भरता होती है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "जो आत्मा कर्मों के आधार पर शुद्ध होती है, वही मोक्ष प्राप्त करती है।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण** (Pramana) **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें किसी स्वर्गीय या नर्कीय स्थिति का भौतिक वर्णन किया गया है, जो भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से व्यर्थ और अवास्तविक है।**

आयत 57

आयत का अनुवाद:
"ये खौलता हुआ पानी और पीप और इस तरह अनवा अक़साम की दूसरी चीज़े हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में जहन्नुम में खौलता पानी और पीप जैसी द्रवों का वर्णन किया गया है।**
- **हेतु (Reason): प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत से यह विरोधाभासी है, क्योंकि भारतीय दर्शन में ऐसा कोई भौतिक दुख या यातना का चित्रण नहीं किया जाता। भारतीय दर्शन में आत्मा की शुद्धि और निर्वाण का लक्ष्य होता है, न कि भौतिक कष्टों का।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "जो व्यक्ति अपने कर्मों को शुद्ध करता है, वह अपने दुखों से मुक्त होता है और आत्मा के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करता है।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें भौतिक दुखों का चित्रण किया गया है, जो भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा के शुद्धिकरण के उद्देश्य से मेल नहीं खाता।**

आयत 58

आयत का अनुवाद:
"तो ये लोग उन्हीं पड़े चखा करें (कुछ लोगों के बारे में) बड़ों से कहा जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग अपनी गलतियों का परिणाम भुगतेंगे, और बड़े लोगों से यह कहा जाएगा कि उन्होंने छोटे लोगों को गुमराह किया।**
- **हेतु (Reason): यह विचार न्याय के सिद्धांत से मेल नहीं खाता क्योंकि इसमें कर्मों का फल एकतरफा और अधूरा दिखाया गया है। न्याय के सिद्धांत में यह माना जाता है कि किसी भी कार्य का परिणाम केवल संबंधित व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर करता है, न कि दूसरों के दोषों पर।**

- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "व्यक्ति केवल अपने कर्मों का फल प्राप्त करता है, न कि दूसरों के कर्मों के परिणाम से।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें दूसरों के कर्मों का दोषी ठहराया जा रहा है, जबकि न्याय के सिद्धांत में प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का परिणाम उसके ही कर्मों के आधार पर होता है।**

आयत 59

आयत का अनुवाद:
"ये (तुम्हारी चेलों की) फौज भी तुम्हारे साथ ही ठूँसी जाएगी उनका भला न हो ये सब भी दोज़ख़ को जाने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Upamana (Comparison)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग दूसरों का अनुसरण करते हैं, वे भी उनका साथ पाकर दोज़ख़ जाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह विचार** Upamana **(तुलना) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता है। यह सिखाता है कि एक व्यक्ति के कर्मों का परिणाम दूसरे के कर्मों से संबंधित नहीं होता। भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर परिणाम प्राप्त करता है, न कि किसी अन्य के कर्मों के आधार पर।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "जो व्यक्ति निष्कलंक कर्म करता है, वह मोक्ष प्राप्त करता है, न कि किसी अन्य के कर्मों के फल से प्रभावित होता है।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Upamana **(तुलना) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें यह सिद्धांत दिया गया है कि लोग अपने परिणामों को दूसरों के कर्मों से जोड़कर प्रभावित कर सकते हैं, जो भारतीय दर्शन से मेल नहीं खाता।**

आयत 60

आयत का अनुवाद:
"तो चेले कहेंगें (हम क्यों) बल्कि तुम (जहन्नुमी हो) तुम्हारा ही भला न हो तो तुम ही लोगों ने तो इस (बला) से हमारा सामना करा दिया तो जहन्नुम भी क्या बुरी जगह है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग अपने कृत्यों के लिए दूसरों को दोष देंगे और यह कहेंगे कि उन्होंने उन्हें जहन्नुम का रास्ता दिखाया।**
- **हेतु (Reason): Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कार्य का परिणाम निश्चित और सामान्य रूप से कर्म के आधार पर होना चाहिए। यह आयत इस सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें यह कहा गया है कि लोग दूसरों के कारण जहन्नुम में जाएंगे, जो कर्मों के परिणाम के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर फल प्राप्त करता है, न कि दूसरों के कर्मों के आधार पर।"**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें यह कहा गया है कि लोग दूसरों के कर्मों से प्रभावित होकर अपने परिणामों को बदल सकते हैं, जबकि भारतीय दर्शन में परिणाम केवल व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर करते हैं।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	**प्रमाण (Pramana)**	**जहन्नुम जैसी अवस्था का प्रमाणिकता से कोई संबंध नहीं।**
57	**प्रमेय (Prameya)**	**भौतिक दुखों का चित्रण भारतीय दर्शन से असंगत है।**
58	Hetu (Reason)	**दूसरों के कर्मों के परिणामों से अपने कर्मों का मिलाना।**
59	Upamana (Comparison)	**दूसरों के कर्मों को अपने परिणाम से जोड़ने का विचार।**
60	Vyapti (Invariable	**परिणाम केवल कर्मों के आधार पर होने चाहिए, न कि**

Concomitance)	**दूसरों के प्रभाव से।**

आयत 61 से आयत 65 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 61:

आयत का अनुवाद: **"फिर वह अर्ज़ करेंगे परवरदिगार जिस शख़्स ने हमारा इस (बला) से सामना कराया तो तू उस पर हमसे बढ़कर जहन्नुम में दो गुना अज़ाब कर।"**

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि जिन लोगों ने बुराई का सामना किया है, उन्हें दो गुना अज़ाब मिलेगा। यह दावा न्याय दर्शन के अनुसार पक्षपाती और असंगत है।

- **हेतु (Reason):**
  आयत के अनुसार, केवल बुराई का सामना करना ही किसी को अधिक अज़ाब देने का कारण नहीं हो सकता। न्याय दर्शन में कर्म और उनके फल का सीधा संबंध है। कर्मों का मूल्यांकन उसके वास्तविक कारण और परिणाम के आधार पर किया जाता है, न कि केवल किसी से सामना करने पर।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अध्याय 4, श्लोक 7-8) में श्री कृष्ण कहते हैं कि ईश्वर का अवतार एक उद्देश्य से होता है, जैसे जब अधर्म बढ़ जाता है, तब धर्म की स्थापना के लिए वह अवतार लेते हैं। यहाँ, ईश्वर का उद्देश्य और कर्मों का निष्कलंक मूल्यांकन दिखाया गया है, जबकि यह आयत एक पक्षपाती दृष्टिकोण अपनाती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन में निहित निष्पक्षता के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना तर्क के कर्मों के परिणाम को असंगत रूप से बढ़ा देती है।

आयत 62:

आयत का अनुवाद:
"और फिर खुद भी कहेंगे हमें क्या हो गया है कि हम जिन लोगों को (दुनिया में) शरीर शुमार करते थे हम उनको यहाँ (दोज़ख़) में नहीं देखते?"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग जिनका शरीर शुमार करते थे, उन्हें वे दोज़ख़ में नहीं देखेंगे।

- **हेतु (Reason):**
  आयत में यह धारणा है कि लोग किसी को इस जीवन में उनके शरीर के आधार पर महत्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन मृत्यु के बाद वे यह नहीं देखेंगे। यह गलत है क्योंकि न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी व्यक्ति की महत्ता उनके कर्मों और गुणों पर निर्भर होती है, न कि शरीर पर।

- **उदाहरण (Example):**
  वैषेशिक दर्शन के अनुसार, किसी व्यक्ति का अस्तित्व और मूल्य उनके गुणों और कर्मों से निर्धारित होते हैं, न कि शारीरिक रूप से।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत शारीरिक रूप से देखे जाने वाले पक्षों को महत्व देने का पक्षधर है, जो न्याय और वैषेशिक दर्शन के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 63:

आयत का अनुवाद:
"क्या हम उनसे (नाहक़) मसखरापन करते थे या उनकी तरफ से (हमारी) आँखे पलट गई हैं?"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह सवाल उठाती है कि क्या उनकी आलोचना नाहक़ थी, या यह सिर्फ एक भ्रम था।

- **हेतु (Reason):**
  यह आयत व्यक्तियों की आलोचना और उनके दृष्टिकोण को संदिग्ध बना देती है, जो न्याय दर्शन में प्रमाण और सत्य के सिद्धांतों के खिलाफ है। आलोचना और सवाल उठाना तब तक सार्थक नहीं होता जब तक किसी के कर्म या कथन का विवेकपूर्ण और तर्कसंगत आधार न हो।

- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, सही या गलत का निर्धारण प्रमाण और तर्क द्वारा होता है, न कि केवल संदेह या भ्रम के आधार पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के बिना किसी व्यक्ति की आलोचना करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 64:

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि जहन्नुमियों का बाहम झगड़ना ये बिल्कुल यक़ीनी ठीक है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि जहन्नुमियों का एक दूसरे से झगड़ना एक निश्चित सत्य है।

- **हेतु (Reason):**
 आयत में यह दावा किया गया है कि जहन्नुमी लोग एक दूसरे से झगड़ेंगे, लेकिन इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में किसी भी घटना का निश्चितता से दावा करने से पहले उसके प्रमाण की आवश्यकता होती है।

- **उदाहरण (Example):**
 वैषेशिक दर्शन में यह माना जाता है कि विश्व में घटनाओं का कारण और प्रभाव तर्क से निर्धारित होता है, न कि केवल एक पूर्वनिर्धारित सत्य के रूप में।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत किसी घटना की निश्चितता को बिना प्रमाण के स्वीकार करती है, जो न्याय दर्शन के विपरीत है।

आयत 65:

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस (अज़ाबे ख़ुदा से) डराने वाला हूँ और यकता क़हार ख़ुदा के सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
 उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि ईश्वर के अलावा कोई भी उपास्य नहीं है, और मैं केवल ईश्वर के अज़ाब से डराने वाला हूँ।

- **हेतु (Reason):**
 यह आयत एक विशेष उपास्य देवता (ईश्वर) के रूप में एक निश्चित उपमान को प्रस्तुत करती है, जबकि भारतीय दर्शन में कोई एकमात्र ईश्वर या उपास्य का दावा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 23-24) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि वे सभी पूजा विधियों का सम्मान करते हैं और सभी के कार्यों का मूल्यांकन उनके श्रद्धा के अनुसार किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक संकुचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के उपमान और विविधता के सिद्धांत से मेल नहीं खाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	हेति (Reason)	कर्मों के परिणाम का मूल्यांकन तर्कहीन और पक्षपाती है।
62	प्रमाण (Pramana)	शरीर के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन गलत है।
63	प्रमेय (Prameya)	आलोचना और संदेह बिना प्रमाण के करना न्याय के खिलाफ है।
64	व्याप्ति (Vyapti)	झगड़े की निश्चितता बिना प्रमाण के दी गई है।
65	उपमान (Upamana)	एकमात्र ईश्वर के उपास्य होने का दावा सार्वभौमिक नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर के कार्यों और परिणामों को बिना तर्क, प्रमाण और अनुभवजन्य आधार के प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांत, जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क, इन आयतों में उल्लंघन किया गया है। यह विचार तात्त्विक दृष्टि से अप्रमाणित और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं।

आयत 66 से आयत 70 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 66:

आयत का अनुवाद:
"सारे आसमान और ज़मीन का और जो चीज़ें उन दोनों के दरमियान हैं (सबका) परवरदिगार ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि सारे आकाश, पृथ्वी और उनके बीच की सारी वस्तुएं भगवान के अधीन हैं और वह अत्यंत दयालु हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा न्याय दर्शन के प्रमेय (अधीन वस्तु) के सिद्धांत से मेल खाता है, लेकिन इसे केवल एक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि विभिन्न भारतीय दार्शनिक परंपराएं (जैसे वेदांत, सांख्य, और वैषेशिक) इस संदर्भ में विभिन्न रूपों में ब्रह्म या परमात्मा की परिभाषा देती हैं। एक ही परमात्मा की अवधारणा सर्वव्यापी नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  वेदांत में ब्रह्म का निराकार रूप और सांख्य दर्शन में परब्रह्म के तत्व पर विचार किया गया है, जहाँ ब्रह्म सर्वव्यापी और अनादि होता है, लेकिन यह हर दृष्टिकोण में भिन्न प्रकार से व्यक्त किया जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक ही दृष्टिकोण से परमात्मा को प्रस्तुत करती है, जबकि भारतीय दर्शन के अनुसार यह संकीर्ण दृष्टिकोण हो सकता है।

आयत 67:

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ये (क़यामत) एक बहुत बड़ा वाक़िया है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत क़यामत को एक "बहुत बड़ा वाक़िया" कहकर प्रस्तुत करती है।

- **हेतु (Reason):**
  क़यामत का दावा बिना किसी प्रमाण या साक्ष्य के केवल एक भावनात्मक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन में किसी भी घटना के बड़े या छोटे होने का मूल्यांकन उस घटना के तात्त्विक और प्रमाणिकता के आधार पर किया जाता है, न कि केवल एक कथन के आधार पर।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अध्याय 11, श्लोक 32) में श्री कृष्ण स्वयं को समय के रूप में दर्शाते हैं, जो जीवन के सभी अंत और प्रारंभ को नियंत्रित करते हैं। यह दर्शन क़यामत को एक निश्चित घटनाक्रम के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसे तर्क और प्रमाण से सिद्ध किया जा सकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत क़यामत के महत्व को बिना प्रमाण और तर्क के प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 68:

आयत का अनुवाद:
"जिससे तुम लोग (ख़्वाहमाख़्वाह) मुँह फेरते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग क़यामत से मुँह फेरते हैं, जबकि यह एक महत्वपूर्ण घटना है।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा करता है कि लोग क़यामत के बारे में अनदेखी करते हैं, लेकिन व्याप्ति के सिद्धांत के अनुसार किसी भी घटना की सार्वभौमिकता और अनिवार्यता को प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  सांख्य दर्शन के अनुसार, क़यामत जैसी घटनाओं को केवल अनुभव के माध्यम से समझा जा सकता है। बिना किसी ठोस प्रमाण और प्रमाणिक आधार के, इस घटना के बारे में कोई भी सार्वभौमिक निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना प्रमाण के क़यामत की निश्चितता को आरोपित करती है।

आयत 69:

आयत का अनुवाद:
"आलम बाला के रहने वाले (फरिश्ते) जब वाहम बहस करते थे उसकी मुझे भी ख़बर न थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि फरिश्ते क़यामत के बारे में बहस करते थे, लेकिन इस विषय की जानकारी किसी को नहीं थी।

- **हेतु (Reason):**
  यह आयत प्रमण के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि इस प्रकार का दावा तर्क या प्रमाण से नहीं

किया जा सकता। फरिश्तों की चर्चा को प्रमाण के बिना स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैषेशिक दर्शन के अनुसार, केवल अनुभवजन्य प्रमाण ही किसी घटना की वास्तविकता को सिद्ध कर सकते हैं। बिना प्रमाण के किसी बहस या विचार को स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं होता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के बिना एक कथा को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन में स्वीकार्य नहीं है।

आयत 70:

आयत का अनुवाद:
"मेरे पास तो बस वही की गयी है कि मैं (ख़ुदा के अज़ाब से) साफ-साफ डराने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि नबी केवल ख़ुदा के अज़ाब से डराने वाले हैं, और यह उनका कार्य है।

- **हेतु (Reason):**
  यह उपमान के सिद्धांत के तहत एक सीमित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। उपमान का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी कार्य या तत्व का मूल्यांकन उसके प्रमाणित गुण और प्रभाव के आधार पर किया जाता है, न कि केवल किसी विशिष्ट कार्य के संदर्भ में।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 3, श्लोक 16) में श्री कृष्ण ने कर्म के महत्व और इसके ईश्वर से संबंधित दायित्व को स्पष्ट किया है, जबकि यह आयत केवल एक विशिष्ट कार्य (डराना) को प्रस्तुत करती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक सीमित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन में उपमान के सिद्धांत से मेल

नहीं खाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	प्रमेय (Prameya)	एकमात्र दृष्टिकोण से परमात्मा को प्रस्तुत करना संकीर्ण है।
67	हेति (Reason)	क़यामत का महत्व बिना प्रमाण और तर्क के प्रस्तुत किया गया।
68	व्याप्ति (Vyapti)	क़यामत की निश्चितता बिना प्रमाण के आरोपित की गई है।
69	प्रमाण (Pramana)	फरिश्तों की बहस बिना प्रमाण के प्रस्तुत की गई है।
70	उपमान (Upamana)	केवल डराने के कार्य को ही प्रस्तुत करना सीमित दृष्टिकोण है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में क़यामत और उसके बारे में किए गए दावों को प्रमाण, तर्क और अनुभव के बिना प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है। यह विचार अप्रमाणित और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं।

आयत 71 से आयत 75 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 71:

आयत का अनुवाद:
"(वह बहस ये थी कि) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं गीली मिट्टी से एक आदमी बनाने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि ईश्वर ने फरिश्तों से कहा कि वह गीली मिट्टी से एक आदमी बनाएंगे।
- **हेतु (Reason):**
  यह घटना प्रमेय (वस्तु) के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि यहाँ एक विशेष वस्तु (मनुष्य) की उत्पत्ति का वर्णन किया जा रहा है। हालांकि, मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में यह कथा जीवविज्ञान और एवल्यूशन के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 11, श्लोक 32) में श्री कृष्ण ने स्वयं को 'काल' के रूप में प्रकट किया है, जो सभी सृष्टि का सृजन और संहार करता है। यह दृष्टिकोण ब्रह्मा के माध्यम से सृष्टि के निर्माण को एक जटिल प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक विशेष और सीमित दृष्टिकोण से मानव सृष्टि का वर्णन करती है, जो न्याय दर्शन और आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है।

आयत 72:

आयत का अनुवाद:
"तो जब मैं उसको दुरूस्त कर लूँ और इसमें अपनी (पैदा) की हुई रूह फूँक दूँ तो तुम सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि जब ईश्वर अपने बनाए हुए मनुष्य में अपनी रूह फूँक देंगे, तो सभी फरिश्ते उसके सामने सजदा करेंगे।

- **हेतु (Reason):**
 यह दावा बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य में रूह डालने पर फरिश्तों का सजदा करना अनिवार्य था। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण प्रमाण और तर्क से स्पष्ट होना चाहिए, और यह घटना केवल एक धार्मिक विश्वास है।

- **उदाहरण (Example):**
 वेदांत के अनुसार, आत्मा (रूह) एक चिरंतन और अविनाशी तत्व है, जो सभी प्राणियों में विद्यमान है। इसे इस प्रकार की विशेष घटना के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना एक विशेष विश्वास को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन में सही नहीं है।

आयत 73:

आयत का अनुवाद:
"तो सब के सब कुल फरिश्तों ने सजदा किया।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि सभी फरिश्तों ने सजदा किया।

- **हेतु (Reason):**
 यह दावा व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाता क्योंकि किसी भी सामान्य घटना के लिए व्याप्ति (सर्वव्यापकता) का दावा बिना ठोस प्रमाण के किया गया है। क्या यह सही है कि सभी फरिश्ते सजदा करते हैं, या क्या कुछ फरिश्ते इसके खिलाफ थे? यह स्पष्ट नहीं किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
 भगवद गीता में श्री कृष्ण के अनुसार, हर कर्म का आधार उनके अस्तित्व के साथ जुड़ा है (अध्याय 4,

श्लोक 7-8)। इसी तरह, कर्मों का वर्णन केवल सामान्य रूप से नहीं किया जाता, बल्कि उन कर्मों के पीछे के कारणों और परिणामों पर भी विचार किया जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बिना प्रमाण के दावा करती है कि सभी फरिश्ते सजदा करते हैं।

आयत 74:

आयत का अनुवाद:
"मगर (एक) इबलीस ने कि वह शेख़ी में आ गया और काफिरों में हो गया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि इबलीस ने सजदा करने से इनकार किया और वह काफिर हो गया।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा प्रमाण (साक्ष्य) के बिना प्रस्तुत किया गया है। इबलीस के काफिर होने और उसकी शेख़ी के कारणों को केवल एक कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि न्याय दर्शन में किसी भी घटना के लिए प्रमाण या तर्क की आवश्यकता होती है।

- **उदाहरण (Example):**
  पतंजलि योग दर्शन में आत्मा की शुद्धता और साधना के मार्ग को बहुत महत्व दिया गया है, जबकि इबलीस की स्थिति को शुद्धता के साथ जोड़ने की आवश्यकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के बिना एक विश्वास को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन में स्वीकार्य नहीं है।

आयत 75:

आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा ने (इबलीस से) फरमाया कि ऐ इबलीस जिस चीज़ को मैंने अपनी ख़ास क़ुदरत से पैदा किया (भला) उसको सजदा करने से तुझे किसी ने रोका क्या तूने तक़ब्बुर किया या वाकई तू बड़े दरजे वालें में है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि इबलीस को सजदा करने से रोकने का कारण उसका अहंकार था।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन उपमान के सिद्धांत से मेल खाता है, क्योंकि यहाँ इबलीस के अहंकार और उसकी स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। हालांकि, यह मूल्यांकन केवल एक काव्यात्मक और धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है, जबकि न्याय दर्शन में कोई भी स्थिति केवल प्रमाण और तर्क के आधार पर समझी जाती है।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता में श्री कृष्ण अहंकार और घमंड को नष्ट करने के लिए योग का अभ्यास करने की सलाह देते हैं (अधिकार 16, श्लोक 4)। इस दृष्टिकोण से इबलीस के अहंकार को समझने का तरीका अधिक समग्र और तर्कसंगत है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उपमान के सिद्धांत को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

71	**प्रमेय (Prameya)**	**गीली मिट्टी से मानव सृष्टि का वर्णन तर्कसंगत नहीं है।**
72	**हेति (Reason)**	**रूह के फूँकने पर फरिश्तों का सजदा करना प्रमाण के बिना प्रस्तुत किया गया।**
73	**व्याप्ति (Vyapti)**	**सभी फरिश्तों का सजदा करना बिना प्रमाण के बताया गया।**
74	**प्रमाण (Pramana)**	**इबलीस का काफिर होना बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।**
75	**उपमान (Upamana)**	**इबलीस के अहंकार को केवल काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए घटनाओं और दावों को न्याय दर्शन के सिद्धांतों से प्रमाण और तर्क के आधार पर नहीं माना जा सकता। यह विश्वास आधारित कथाएँ हैं, जो तर्कसंगत विश्लेषण में कमजोर प्रतीत होती हैं।

आयत 76 से आयत 80 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 76:

आयत का अनुवाद:
"इबलीस बोल उठा कि मैं उससे बेहतर हूँ, तूने मुझे आग से पैदा किया और इसको तूने गीली मिट्टी से पैदा किया।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इबलीस का कहना है कि वह आदम से बेहतर है क्योंकि उसे आग से पैदा किया गया है, जबकि आदम को मिट्टी से।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क तर्कसंगत नहीं है क्योंकि एक तत्व (आग) और दूसरे तत्व (मिट्टी) के बीच श्रेष्ठता का दावा करने के लिए कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी वस्तु या तत्व केवल उसके गुण और स्वरूप के आधार पर मूल्यांकन किया जा सकता है, न कि किसी की रचनात्मक प्रक्रिया के आधार पर।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 10, श्लोक 20) में श्री कृष्ण कहते हैं कि मैं सभी तत्वों का स्रोत हूँ और उनके गुणों में कोई भेद नहीं है। इसी प्रकार, तत्वों के बीच श्रेष्ठता का तर्क न केवल असंगत है, बल्कि यह ब्रह्म के अद्वितीयता के सिद्धांत के खिलाफ भी है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्क के बिना एक अपूर्ण तर्क प्रस्तुत करती है और यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

आयत 77:

आयत का अनुवाद:
"(कहाँ आग कहाँ मिट्टी) ख़ुदा ने फरमाया कि तू यहाँ से निकल (दूर हो) तू यक़ीनी मरदूद है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर ने इबलीस को अपमानित किया और उसे पृथ्वी से बाहर निकाल दिया।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क उपमान के सिद्धांत से संबंधित है, जहाँ दो तत्वों (आग और मिट्टी) के आधार पर इबलीस को अपमानित किया गया है। इस तर्क में कोई ठोस प्रमाण या कारण नहीं दिया गया है कि क्यों इबलीस को निष्कासित किया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 16, श्लोक 19) में दुष्ट आत्माओं को उनके कर्मों के आधार पर ही नष्ट करने की बात की जाती है, न कि किसी तत्व के आधार पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह तत्वों के बीच श्रेष्ठता का कोई वैध कारण नहीं प्रस्तुत करती।

आयत 78:

आयत का अनुवाद:
"और तुझ पर रोज़ जज़ा (क़यामत) तक मेरी फिटकार पड़ा करेगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर ने इबलीस को क़यामत तक के लिए शापित किया।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा प्रमाण (साक्ष्य) पर आधारित नहीं है। शापित होने का दावा बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का दावा प्रमाण और तर्क से स्पष्ट होना चाहिए।

- **उदाहरण (Example):**
  पतंजलि योग दर्शन के अनुसार, कर्मों का परिणाम व्यक्ति की साधना और प्रयासों पर निर्भर करता है, न कि किसी बाहरी शाप पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत बिना प्रमाण के एक विशेष शाप के बारे में दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 79:

आयत का अनुवाद:
"शैतान ने अर्ज़ की परवरदिगार, तू मुझे उस दिन तक की मोहलत अता कर, जिसमें सब लोग (दोबारा) उठा खड़े किए जाएंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इबलीस ने क़यामत तक की मोहलत मांगी।
- **हेतु (Reason):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से संबंधित है, क्योंकि यहाँ इबलीस द्वारा मांगी गई मोहलत को एक वस्तु (समय) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हालांकि, समय का अवधारण और शर्तों पर आधारित मोहलत का मांगना तर्कसंगत नहीं है क्योंकि यह किसी अव्यक्त घटना पर निर्भर है।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि आत्मा अविनाशी है और समय की अवधारणा उसके लिए निरर्थक है (अधिकार 2, श्लोक 20)। इस दृष्टिकोण से इबलीस का समय की मांग करना तर्कसंगत नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत समय और कर्मों के आधार पर एक असंगत मांग प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन में स्वीकृत नहीं है।

आयत 80:

आयत का अनुवाद:
"फरमाया, तुझे एक वक़्त मुअय्यन के दिन तक की मोहलत दी गयी।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर ने इबलीस को एक निश्चित समय तक मोहलत दी।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा व्याप्ति के सिद्धांत से संबंधित नहीं है, क्योंकि यह केवल एक व्यक्तिगत घटना है, जो एक विशेष शर्त (मोहलत) पर आधारित है। इसका कोई सामान्य रूप से लागू होने वाला प्रमाण नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  गीता में कर्मों के परिणाम को व्यक्तिगत प्रयासों और साधना से जोड़ा जाता है, न कि किसी बाहरी शर्तों से।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह केवल इबलीस से संबंधित एक विशेष घटना को प्रस्तुत करती है, जो सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
76	हेति (Reason)	तत्वों (आग और मिट्टी) के बीच श्रेष्ठता का कोई प्रमाण नहीं।
77	उपमान (Upamana)	तत्वों के आधार पर इबलीस को निष्कासित करने का कोई प्रमाण नहीं।
78	प्रमाण (Pramana)	शाप के बारे में दावा बिना प्रमाण के किया गया।
79	प्रमेय (Prameya)	समय की अवधारणा पर आधारित मोहलत का तर्कसंगत नहीं होना।

80	**व्याप्ति (Vyapti)**	**विशेष घटना के आधार पर समय मोहलत का दावा सामान्य नहीं हो सकता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए दावे और घटनाएँ न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तर्कसंगत और प्रमाण आधारित नहीं हैं। यह धार्मिक विश्वासों और कथाओं पर आधारित हैं, जो न्याय और तर्क से मेल नहीं खातीं।

आयत 81 से आयत 85 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 81:

आयत का अनुवाद:
"वह बोला तेरी ही इज़्ज़त व जलाल की क़सम (81)"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इबलीस खुदा की इज़्ज़त और जलाल की क़सम खाता है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रमाण पर आधारित नहीं है। कोई भी दावा तब तक प्रमाणित नहीं माना जा सकता जब तक उसे स्पष्ट रूप से प्रमाणित न किया जाए। केवल इज़्ज़त और जलाल की क़सम खाने से यह सत्य नहीं बनता। न्याय दर्शन में एक सही तर्क तभी माना जाता है जब वह प्रमाणित और प्रमाणों के आधार पर हो।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 16, श्लोक 24) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि धर्म के पालन से ही आत्मा की शुद्धि होती है, न कि क़स्मों या वादों से।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के अभाव में केवल एक अप्रमाणित क़स्म प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 82:

आयत का अनुवाद:
"उनमें से तेरे ख़ालिस बन्दों के सिवा सब के सब को ज़रूर गुमराह करूँगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इबलीस का दावा है कि वह सब लोगों को गुमराह करेगा, केवल उन लोगों को छोड़कर जो खुदा के ख़ालिस बंदे हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा प्रमेय के सिद्धांत से संबंधित है क्योंकि इबलीस अपने उद्देश्य (गुमराह करना) के लिए एक वस्तु (जिन्हें गुमराह किया जाएगा) का उल्लेख कर रहा है। लेकिन इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया कि वह वास्तव में यह कर सकता है।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 9, श्लोक 22) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति उनके साथ अपने कर्मों को जोड़ता है, उसे वह अपने मार्ग पर स्थिर रखते हैं। इस दृष्टिकोण से, इबलीस का दावा असंगत है, क्योंकि वह कभी भी पूरे मानवता को गुमराह नहीं कर सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत के अंतर्गत असंगत दावा प्रस्तुत करती है, जो तर्कसंगत नहीं है।

आयत 83:

आयत का अनुवादः
"ख़ुदा ने फरमाया तो (हम भी) हक़ बात (कहे देते हैं)।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ख़ुदा ने इबलीस के दावे का खंडन करते हुए सत्य की बात कहने की घोषणा की।
- **हेतु (Reason):**
  यह दावा व्याप्ति के सिद्धांत से संबंधित है, क्योंकि ईश्वर ने अपने आदेशों को सार्वभौमिक रूप से सही और सत्य के रूप में प्रस्तुत किया। हालांकि, यह केवल एक कथन है और इसका कोई बाहरी प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 2, श्लोक 47) में कर्मयोग की बात करते हुए कहा गया है कि कर्मों का फल सत्य और अनिवार्य रूप से होता है, जो सत्य की बात के अनुरूप है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत सत्य की सार्वभौमिकता को प्रमाणीकरण के बिना प्रस्तुत करती है, जिससे यह केवल एक बयान बनकर रह जाती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 84:

आयत का अनुवादः
"और मैं तो हक़ ही कहा करता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ख़ुदा का कहना है कि वह हमेशा सत्य ही कहता है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रमाण के सिद्धांत से संबंधित है। ईश्वर का सत्य कहना एक अभिव्यक्ति है, लेकिन इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि यह सत्य हर परिस्थिति में लागू होता है।

- **उदाहरण (Example):**
  पतंजलि योग दर्शन के अनुसार, सत्य की परिभाषा और पालन का अर्थ केवल आंतरिक दृष्टि और स्पष्टता से ही हो सकता है। यह आयत केवल एक सामान्य कथन प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं होता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत सत्य के सार्वभौमिक होने का दावा करती है, लेकिन इसका कोई साक्ष्य या प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती।

आयत 85:

आयत का अनुवाद:
"कि मैं तुझसे और जो लोग तेरी ताबेदारी करेंगे उन सब से जहन्नुम को ज़रूर भरूँगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ख़ुदा ने इबलीस और उसके अनुयायियों को दोज़ख़ में भेजने का वादा किया।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क हेतु (Reason) से संबंधित है, क्योंकि इबलीस का यह दावा पूरी तरह से भविष्यवाणी और शाप पर आधारित है। इस प्रकार, यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता, क्योंकि किसी भी

घटना को प्रमाणित और तर्कसंगत तरीके से समझने की आवश्यकता होती है।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 16, श्लोक 20) में भगवान श्री कृष्ण दुष्टों के कुकर्मों और उनके दुष्परिणामों का उल्लेख करते हैं, जबकि कर्मों का परिणाम किसी के कर्मों के आधार पर होता है, न कि पूर्वनिर्धारित शापों के आधार पर।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्क और प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि केवल एक कथन के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	प्रमाण (Pramana)	क़स्म के आधार पर सत्य का दावा, बिना प्रमाण के।
82	प्रमेय (Prameya)	इबलीस का दावा प्रमाण और तर्क के बिना असंगत है।
83	व्याप्ति (Vyapti)	सत्य के सार्वभौमिक होने का दावा बिना प्रमाण के।
84	प्रमाण (Pramana)	सत्य के बारे में दावा, लेकिन कोई साक्ष्य नहीं।
85	हेति (Reason)	शाप के आधार पर गुमराही का दावा, बिना तर्क के।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए दावे और घटनाएँ न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तर्कसंगत और प्रमाण आधारित नहीं हैं। इबलीस का दावा और ईश्वर के कथन बिना प्रमाण और साक्ष्य के प्रस्तुत किए गए हैं, जो न्याय दर्शन के अनुसार अपूर्ण और असंगत हैं।

आयत **86** से आयत **88** का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण और आलोचना

आयत 86:

आयत का अनुवादः
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो तुमसे न इस (तबलीग़े रिसालत) की मज़दूरी माँगता हूँ और न मैं (झूठ मूठ) बनावट करने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  राहुल (रसूल) कहते हैं कि वह अपनी मुहम्मदियत की प्रचार-प्रसार के लिए कोई पैसे या कुछ भी नहीं मांगते और न ही कोई झूठ बोलते हैं।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क हेटु से संबंधित है, क्योंकि यह स्पष्ट किया जा रहा है कि कोई व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने की बजाय वे केवल ईश्वर का संदेश दे रहे हैं। यह सिद्धांत किसी प्रकार के तात्कालिक या मुनाफे की तलाश के बिना सत्यता का पालन करने की ओर संकेत करता है।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि वे लोगों के भले के लिए कर्म करते हैं, न कि अपने स्वार्थ के लिए (अधिकार 3, श्लोक 22)।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उस सिद्धांत का पालन करती है, कि एक सच्चा संदेशवाहक अपने कार्य को ईश्वर की इच्छा के अनुसार करता है, न कि किसी स्वार्थ या झूठ के आधार पर।

आयत 87:

आयत का अनुवादः
"ये (कुरान) तो बस सारे जहाँन के लिए नसीहत है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  कुरान को सभी मानवता के लिए एक नसीहत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- **हेतु (Reason):**
  यह प्रमेय से संबंधित है, क्योंकि कुरान को एक सार्वभौमिक उपदेश के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य सभी इंसानों के लिए मार्गदर्शन करना है। हालांकि, यह दावा केवल एक कथन के रूप में रखा गया है, और इसका वास्तविक प्रमाण या तर्क नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अधिकार 4, श्लोक 7) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि वे अपने कर्मों और संदेशों के द्वारा मानवता की भलाई के लिए कार्य करते हैं। लेकिन, यह बात सिद्ध होती है कि कोई भी उपदेश तभी असरदार होता है जब उसे सभी मानवता द्वारा समझा और अपनाया जाए।

- **निगमन (Conclusion):**
  कुरान को सार्वभौमिक नसीहत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका प्रमाण कोई सार्वभौमिक सत्य नहीं है, और न ही यह सभी मानवताओं में समान रूप से लागू होता है।

आयत 88:

आयत का अनुवादः
"और कुछ दिनों बाद तुमको इसकी हक़ीकत मालूम हो जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 कुरान की सच्चाई का ज्ञान कुछ समय बाद प्राप्त होगा।

- **हेतु (Reason):**
 यह व्याप्ति से संबंधित है, क्योंकि यह दावा किया जा रहा है कि कुरान की वास्तविकता समय के साथ उजागर होगी। लेकिन यह बयानी कथन, भविष्यवाणी और प्रमाण के बिना प्रस्तुत किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
 भगवद गीता (अधिकार 2, श्लोक 47) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि ज्ञान और कर्म की सच्चाई के बारे में समय के साथ स्पष्टता प्राप्त होती है, लेकिन यह शाश्वत सत्य एक स्थायी और तात्कालिक रूप से प्रमाणित नहीं होता।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत एक भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत की जाती है, लेकिन इसके प्रमाण या तर्क की कमी है। न्याय दर्शन में प्रमाण के बिना कोई भी भविष्यवाणी केवल अनुमान और विचार से अधिक नहीं मानी जाती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
86	**हेति (Reason)**	**यह तर्क करता है कि रसूल कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं चाहते, लेकिन इसमें कोई प्रमाण नहीं है।**
87	**प्रमेय (Prameya)**	**कुरान को सार्वभौमिक नसीहत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है।**
88	**व्याप्ति (Vyapti)**	**भविष्यवाणी की गई सच्चाई का कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दी गई बातें सिद्धांतों और तर्कों से संबंधित हैं, लेकिन इनमें प्रमाण और तात्कालिक सत्यता का अभाव है। ये आयतें केवल एक सामान्य बयान और भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से इनकी कोई प्रमाणिकता या व्यावहारिक सत्यता नहीं है।